CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 111**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परम्परा के रूप में प्राप्त होती है । जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं – हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है । ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या सम्प्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है । राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है ।

जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है । राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है – देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े । महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे । व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं ।

जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियों ने शासन किया । चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत – तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा । आज देश में अनेक प्रकार के आन्दोलन चल रहे हैं । कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है । आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है । फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है । [15 अंक]

1(क). गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक में गद्यांश का केंद्रीय विचार संक्षेप में व्यक्त होना चाहिए।
- राष्ट्र के प्रति निष्ठा, एकता और देशहित को प्राथमिकता देना पूरे गद्यांश का मुख्य विषय है।

चरण 1: केंद्रीय भाव पहचानना गद्यांश में राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान के साथ राष्ट्रीयता की भावना समझाई गई है। लेखक निजी स्वार्थ और संकीर्ण भेदभाव से ऊपर उठकर देश के लिए काम करने पर बल देता है।

चरण 2: शीर्षक चुनना देशभक्तों के त्याग तथा फूट से होने वाली हानि के उदाहरण भी राष्ट्रीयता का महत्त्व सिद्ध करते हैं। इसलिए शीर्षक ऐसा हो जो इन सभी विचारों को समेट सके। केवल भाषा या संस्कृति को शीर्षक बनाना पूरे कथ्य को व्यक्त नहीं करेगा।

चरण 3: निष्कर्ष उचित शीर्षक है—राष्ट्रीयता की भावना।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय आरंभ, मध्य और अंत में दोहराए गए केंद्रीय विचार को एक छोटे पदबंध में लिखें।

1(ख). अस्तित्व एवं अनिवार्य से प्रत्यय और उपसर्ग छाँटकर लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय मूल शब्द के बाद जुड़ता है, जबकि उपसर्ग शब्द के आरंभ में जुड़कर उसका अर्थ बदलता है।
- दिए गए शब्दों को अर्थपूर्ण मूल अंश और जुड़े हुए अंश में अलग करके पहचानना चाहिए।

चरण 1: प्रत्यय पहचानना अस्तित्व का शब्द-विभाजन अस्ति + त्व है। इसमें त्व अंत में जुड़ा हुआ भाववाचक प्रत्यय है। इससे होने या विद्यमान रहने का भाव व्यक्त होता है।

चरण 2: उपसर्ग पहचानना अनिवार्य का विभाजन अ + निवार्य है। इसमें अ निषेध का अर्थ देने वाला उपसर्ग है। निवार्य अर्थात जिसे टाला जा सके; अनिवार्य अर्थात जिसे टाला न जा सके। केवल आरंभ के दो वर्ण देखकर अन् को उपसर्ग मानना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष अस्तित्व में प्रत्यय—त्व; अनिवार्य में उपसर्ग—अ।

त्वरित सुझाव: अनिवार्य का मूल शब्द निवार्य रखकर अर्थ जाँचें; इससे अ उपसर्ग की सही पहचान होगी।

1(ग). "जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है ।" रचना के आधार पर वाक्य का प्रकार लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- जब से आरंभ होने वाला उपवाक्य यहाँ तो वाले प्रधान उपवाक्य से जुड़ा है।

चरण 1: उपवाक्य अलग करना जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है—यह आश्रित उपवाक्य है। यह अगली बात की परिस्थिति बताता है और अकेले पूरे कथन को व्यक्त नहीं करता।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य पहचानना तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है—यह प्रधान उपवाक्य है। आश्रित उपवाक्य इसके साथ जुड़कर पूरा आशय देता है। दोनों उपवाक्य समान स्वतंत्रता वाले नहीं हैं; इसलिए इसे संयुक्त वाक्य नहीं कहेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के आधार पर यह मिश्र वाक्य है।

त्वरित सुझाव: जब–तो का संबंध देखकर दोनों उपवाक्यों की निर्भरता जाँचें; केवल दो क्रियाएँ देखकर संयुक्त न लिखें।

1(घ). 'स्व' से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्द का प्रसंगानुकूल अर्थ उसके आसपास की पंक्तियों से निर्धारित होता है।
- देश को प्राथमिकता देना तथा अहं में सिमटना यहाँ परस्पर विरोधी प्रवृत्तियाँ हैं।

चरण 1: स्व का प्रसंग समझना यहाँ स्व से तात्पर्य व्यक्ति के निजी अहं, स्वार्थ तथा अपने धर्म, जाति या समूह के प्रति संकीर्ण आग्रह से है। लेखक उस मानसिकता की ओर संकेत करता है जिसमें व्यक्ति केवल अपना हित देखकर दूसरों के साथ भेदभाव करता है। गद्यांश का अंतिम अंश भी आदमी के अहं में सिमटने को राष्ट्रीय बोध के अभाव से जोड़ता है।

चरण 2: उसे मिटाने की आवश्यकता राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त देश को प्राथमिकता देना है। निजी स्वार्थ और संकीर्ण आग्रह बने रहने पर लोगों में फूट पड़ती है, जिसका लाभ बाहरी व्यक्ति उठाता है। इसलिए राष्ट्र की एकता, स्वतंत्रता और विकास के लिए अहं तथा स्वार्थ का त्याग आवश्यक है। यहाँ स्व को मिटाना व्यक्ति के जीवन या उसकी समूची पहचान को नष्ट करना नहीं, देशहित में संकीर्णता छोड़ना है।

चरण 3: निष्कर्ष स्व का अर्थ निजी अहं और संकीर्ण स्वार्थ है। राष्ट्रीय एकता तथा देशहित को सर्वोपरि रखने के लिए उसका त्याग आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: स्व का अर्थ निकालते समय देश को प्राथमिकता और अहं में सिमटने वाली दोनों पंक्तियों को साथ पढ़ें।

1(ङ). आशय स्पष्ट कीजिए – "राष्ट्र केवल ज़मीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय मूल कथन का विस्तार उसी गद्यांश के विचारों से करना चाहिए।
- राष्ट्र का संबंध भौगोलिक क्षेत्र के साथ पूर्वजों से मिली परंपराओं और सामूहिक जीवन से भी है।

चरण 1: भौगोलिक अर्थ से आगे समझना लेखक के अनुसार राष्ट्र केवल निश्चित सीमाओं वाली भूमि नहीं है। वह वह परिवेश भी है

जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और जीवन बिताते हैं। इसलिए उससे हमारा संबंध मात्र निवास का नहीं, आत्मीयता और अपनेपन का भी है। भूमि का उल्लेख राष्ट्र के बाहरी रूप को दिखाता है, जबकि सांस्कृतिक विरासत उसके भावनात्मक और सामाजिक आधार को स्पष्ट करती है।

चरण 2: विरासत का आशय स्पष्ट करना हमें पूर्वजों से परंपरा के रूप में जो संस्कृति और सामूहिक जीवन की धरोहर प्राप्त होती है, वह भी राष्ट्र का अंग है। इसी साझा विरासत से भिन्न धर्म, जाति, भाषा और संप्रदाय के लोगों में स्नेह तथा एकता की भावना उत्पन्न होती है। अतः राष्ट्र की रक्षा और उन्नति का अर्थ भूमि की रक्षा के साथ उस सांस्कृतिक अपनत्व और एकता को बनाए रखना भी है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्र भूमि के साथ पूर्वजों से मिली सांस्कृतिक परंपराओं और साझा आत्मीय जीवन का रूप है; इसी कारण वह हमारे लिए सांस्कृतिक विरासत भी है।

त्वरित सुझाव: आशय में भूमि, पूर्वजों की परंपरा और साझा अपनत्व—इन तीनों के संबंध को स्पष्ट करें।

1(च). राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिभाषा के लिए गद्यांश में लेखक द्वारा दिया गया स्पष्ट अर्थ आधार बनता है।
- नाम पूछे जाने पर केवल गद्यांश में चर्चित व्यक्तियों में से ही चयन करना चाहिए।

चरण 1: राष्ट्रीयता का आशय लिखना लेखक के अनुसार राष्ट्र के लिए जीना और काम करना तथा उसकी स्वतंत्रता एवं विकास के लिए सक्रिय रहना राष्ट्रीयता है। इसमें देश को प्राथमिकता दी जाती है और निजी स्वार्थ, धर्म, जाति या भाषा की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर परस्पर स्नेह रखा जाता है। इस तरह राष्ट्रीयता केवल भावना व्यक्त करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि देशहित में किए गए कार्यों में दिखाई देती है।

चरण 2: दो राष्ट्रभक्त चुनना गद्यांश में महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस के नाम आए हैं। लेखक बताता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्होंने अनगिनत कष्ट उठाए, फिर भी अपने निश्चय में अटल रहे। प्रश्न में दो नाम माँगे गए हैं, इसलिए महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस लिखे जा सकते हैं। उनके कार्यों का उल्लेख परिभाषा को त्याग और दृढ़ता का व्यावहारिक आधार देता है।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्रीयता राष्ट्र की स्वतंत्रता और विकास के लिए जीने तथा काम करने की भावना है। दो राष्ट्रभक्त हैं—महात्मा गांधी और सुभाषचन्द्र बोस।

त्वरित सुझाव: परिभाषा और नाम को अलग-अलग लिखें तथा नाम गद्यांश में दी गई सूची से ही चुनें।

1(छ). राष्ट्रीय बोध का अभाव किन-किन रूपों में दिखाई देता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य संबंधी उत्तर में गद्यांश में बताए कारणों और उनके प्रत्यक्ष रूपों को अलग पहचानना चाहिए।
- राष्ट्रीय बोध का अभाव संकीर्ण पहचान के आधार पर भेदभाव और संघर्ष के रूप में सामने आता है।

चरण 1: भेदभाव और संघर्ष के रूप पहचानना राष्ट्रीय बोध का अभाव धर्म, जाति, कुल और भाषा के आधार पर व्यवहार करने में दिखाई देता है। ऐसी दृष्टि संकुचित होकर लोगों को आपस में बाँटती है। गद्यांश में जातिगत तथा भाषागत भेदभाव का विशेष उल्लेख है। जब साझा राष्ट्र के प्रति अपनत्व की जगह अपने समूह का आग्रह बढ़ जाता है, तब नागरिकों में स्वाभाविक स्नेह और पारस्परिक एकता कम होने लगती है।

चरण 2: वर्तमान उदाहरण जोड़ना लेखक भाषा को लेकर होने वाले संघर्षों और धर्म अथवा क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाले जाने को इसके प्रत्यक्ष रूप बताता है। आदमी का अपने अहं में सिमटना भी राष्ट्रीय बोध के अभाव का संकेत है। इन प्रवृत्तियों से फूट पड़ती है और तीसरा व्यक्ति उसका लाभ उठाता है। इसलिए उत्तर में केवल देशप्रेम की कमी कहना पर्याप्त नहीं; गद्यांश में बताए भेदभाव और आंदोलनों को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष राष्ट्रीय बोध का अभाव जातिगत तथा भाषागत भेदभाव, भाषा-संघर्ष, धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकालने और व्यक्ति के अहं में सिमटने में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: अंतिम अनुच्छेद से ठोस रूप चुनें; केवल सामान्य कथन लिखकर भाषा, धर्म और क्षेत्र के उदाहरण न छोड़ें।

1(ज). राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है ? उदाहरण सहित लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश व्यक्ति की देशहितकारी नीतियों और कर्मों को राष्ट्रीयता का आधार मानता है।
- उदाहरण का उद्देश्य बताए गए सिद्धांत को गद्यांश के ही प्रसंग से प्रमाणित करना है।

चरण 1: व्यक्ति का स्थान स्पष्ट करना राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति की भूमिका आधारभूत है। जब प्रत्येक व्यक्ति निजी स्वार्थ तथा धर्म, जाति और भाषा की बाधाओं को भुलाकर देश की स्वतंत्रता और विकास के लिए काम करता है, तभी सामूहिक प्रगति संभव होती है। लेखक व्यक्ति से पारस्परिक सीमाओं की बाधाएँ दूर करने की अपेक्षा करता है। इस प्रकार देश का उत्थान नागरिकों के आपसी स्नेह, त्याग और देशहित को प्राथमिकता देने वाले व्यवहार पर निर्भर करता है।

चरण 2: गद्यांश का उदाहरण देना महात्मा गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस ने राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अनेक कष्ट सहे, किंतु अपने निश्चय से नहीं डिगे। उनका उदाहरण स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का दृढ़ संकल्प और त्याग राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है। इसके विपरीत, जब व्यक्ति केवल अपने अहं और समूहगत हित में सिमटता है, तब फूट बढ़ती है और बाहरी लोग लाभ उठाते हैं। अतः देशहितकारी व्यक्ति राष्ट्रोत्थान की सक्रिय शक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यक्ति राष्ट्रोत्थान की आधारभूत शक्ति है। गांधी, तिलक और सुभाषचन्द्र बोस का कष्ट सहकर देशहित में अडिग रहना इसका उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: भूमिका के साथ एक स्पष्ट उदाहरण जोड़ें और बताएँ कि वह त्याग तथा देशहित की बात को कैसे सिद्ध करता है।

1(झ). व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्त्व हैं । कैसे ? तर्क सहित उत्तर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कपूर्ण उत्तर में दोनों प्रवृत्तियों के उद्देश्य और परिणाम की तुलना करनी चाहिए।
- गद्यांश में देश को प्राथमिकता देना राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त बताई गई है।

चरण 1: दोनों प्रवृत्तियों का अंतर समझना व्यक्तिगत स्वार्थ में व्यक्ति अपने लाभ, अहं और सीमित समूह के हित को सबसे ऊपर रखता है। वह धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र के आधार पर दूसरे लोगों से भेदभाव कर सकता है। इसके विपरीत राष्ट्रीय भावना सभी नागरिकों के प्रति स्नेह और राष्ट्र की स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की प्रेरणा देती है। उसमें देश को प्राथमिकता दी जाती है, भले ही इसके लिए अपने संकीर्ण हित छोड़ने पड़ें।

चरण 2: परिणाम के आधार पर विरोध सिद्ध करना स्वार्थ और अहं से लोगों में फूट पड़ती है। गद्यांश बताता है कि भारत की फूट का लाभ विदेशियों ने उठाया और धर्म, भाषा तथा क्षेत्र के संघर्ष राष्ट्रीय बोध की कमी दिखाते हैं। राष्ट्रीय भावना ऐसी बाधाओं को हटाकर

एकता और सहयोग बढ़ाती है। इसलिए संकीर्ण व्यक्तिगत स्वार्थ और राष्ट्रीय भावना की दिशाएँ विपरीत हैं—एक विभाजन पैदा करता है, दूसरी सामूहिक हित के लिए त्याग की अपेक्षा करती है।

चरण 3: निष्कर्ष संकीर्ण व्यक्तिगत स्वार्थ निजी लाभ और विभाजन को बढ़ाता है, जबकि राष्ट्रीय भावना देशहित, एकता और त्याग को प्रधानता देती है; इसलिए दोनों परस्पर विरोधी हैं।

त्वरित सुझाव: तर्क को उद्देश्य और परिणाम से जोड़ें: निजी लाभ से फूट तथा देशहित से एकता का संबंध दिखाएँ।

---

2. पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे ?
लहू गर्म करने को रक्खो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार ।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बातों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले ।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार ? [5 अंक]

2(क). कलम किस बात की प्रतीक है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में किसी वस्तु के माध्यम से उससे व्यापक भाव को व्यक्त करना प्रतीक-विधान है।
- पद्यांश में कलम का संबंध विचार, अक्षर और मानसिक जागरण से है।

चरण 1: संबंधित पंक्ति पहचानें कवि कहता है कि कलम विचारों के जलते अंगारे पैदा करती है। आगे अक्षरों को चिंगारी बताया गया है। इससे स्पष्ट है कि यहाँ कलम केवल लिखने का साधन नहीं, बल्कि प्रभावशाली विचारों को अभिव्यक्त करने वाली शक्ति है।

चरण 2: प्रतीक का अर्थ समझें ये विचार मनुष्य के भीतर साहस, उत्साह और देश के प्रति जागृति उत्पन्न करते हैं। अतः कलम ज्ञान, विचार और प्रेरणादायक लेखन की शक्ति का प्रतीक बनती है। उसका प्रभाव मन और चेतना पर पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष कलम जाग्रत विचारों, ज्ञान और प्रेरक लेखन की शक्ति की प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: कलम के पास आए विचार, अक्षर और चिंगारी शब्दों से उसका प्रतीकार्थ निकालें।

2(ख). तलवार की आवश्यकता कहाँ पड़ती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित कविता का उत्तर उसकी स्पष्ट पंक्ति के आधार पर देना चाहिए।
- पद्यांश में विचारों की प्रेरक शक्ति और आत्मरक्षा की भौतिक शक्ति में अंतर है।

चरण 1: स्पष्ट कथन खोजें पद्यांश में कहा गया है, "हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किन्तु तलवार। इस पंक्ति में तलवार की आवश्यकता का कारण और परिस्थिति दोनों मिलते हैं। यह आवश्यकता किसी सामान्य असहमति या बहस के लिए नहीं बताई गई है।

चरण 2: प्रसंग में अर्थ स्पष्ट करें हिंस्र जीव प्राणों पर आक्रमण करने वाली क्रूर शक्ति का संकेत करता है। ऐसी शक्ति से अपने को बचाने और आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए वास्तविक रक्षात्मक साधन चाहिए। इसी आत्मरक्षा के प्रसंग में कवि तलवार को आवश्यक मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष हिंस्र जीव अथवा क्रूर आक्रमणकारी से अपनी रक्षा करने के लिए तलवार की आवश्यकता पड़ती है।

त्वरित सुझाव: कहाँ की जगह कविता में दी गई परिस्थिति लिखें: हिंस्र आक्रमण से आत्मरक्षा।

2(ग). लहू को गर्म करने से कवि का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में लहू गर्म होना उत्साह और साहस के जागने का लाक्षणिक प्रयोग है।
- आशय बताते समय शब्दों का शारीरिक अर्थ नहीं, प्रसंग से निकला भाव लिया जाता है।

चरण 1: शब्दों को प्रसंग से जोड़ें कवि मन में ज्वलित विचार रखने की प्रेरणा देता है। विचारों के अंगारे, प्रज्वलित प्राण और भीतर जलते शोले जैसे प्रयोग भी मानसिक ऊर्जा का संकेत हैं। इसलिए लहू गर्म करने का अर्थ रक्त का वास्तविक ताप बढ़ाना नहीं है।

चरण 2: भावार्थ व्यक्त करें कवि चाहता है कि मनुष्य आलस्य, भय और निष्क्रियता छोड़कर उत्साह तथा निर्भीकता से भर जाए। उसके भीतर अन्याय का सामना करने और अपने देश के लिए सक्रिय रहने का संकल्प जागे। यही विचारों से उत्पन्न ओज लहू की गर्मी कहलाता है।

चरण 3: निष्कर्ष लहू को गर्म करने से कवि का आशय मन में जोश, साहस, उत्साह और देशप्रेम की भावना जगाना है।

त्वरित सुझाव: ज्वलित विचार के साथ पढ़कर लहू गर्म होने का भावात्मक अर्थ लिखें।

2(घ). कैसे व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता नहीं होती ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में निर्भयता और प्रखर विचार व्यक्ति की आंतरिक शक्ति हैं।
- उत्तर में अंतिम पंक्तियों को उनसे पहले आए गुणों के साथ जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: व्यक्ति के गुण पहचानें कवि ऐसे नर-नारियों का वर्णन करता है जो निर्भय हैं, जिनके भीतर शोले जलते हैं और जिनकी बातों में बिजली है। ये बिंब उनके साहस, तेजस्विता तथा प्रखर विचारों को व्यक्त करते हैं। उनका मन भय से पराजित नहीं होता।

चरण 2: अंतिम प्रश्न का आशय समझें ऐसे व्यक्ति की जाग्रत चेतना और दृढ़ मनोबल उसे विरोध का सामना करने की शक्ति देते हैं। इसलिए कवि पूछता है कि उसके हाथ में तलवार न हो तो क्या चिंता है। यहाँ आंतरिक निर्भीकता और संकल्प की श्रेष्ठता बताई गई है।

चरण 3: निष्कर्ष जो व्यक्ति निर्भय, साहसी, दृढ़ संकल्प वाला और प्रखर विचारों से ओतप्रोत हो, उसे तलवार न होने की चिंता नहीं होती।

त्वरित सुझाव: निर्भय, शोले और बिजली के बिंबों से व्यक्ति के गुण लेकर उत्तर बनाएँ।

2(ङ). तलवार कब अपरिहार्य हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपरिहार्य का अर्थ है जिसे टाला न जा सके या जिसके बिना काम न चले।
- कवि विचारों की शक्ति स्वीकार करते हुए हिंसक आक्रमण से बचाव का अलग प्रसंग रखता है।

चरण 1: संकट की परिस्थिति पहचानें पद्यांश की पंक्ति हिंस्र जीव से बचने के लिए तलवार की आवश्यकता बताती है। यहाँ ऐसा संकट है जिसमें केवल प्रेरणादायक विचार रखना पर्याप्त बचाव नहीं बनता, क्योंकि सामने प्रत्यक्ष हिंसक आक्रमण और जीवन के लिए खतरा होता है।

चरण 2: अनिवार्यता स्पष्ट करें जब क्रूर आक्रामक शक्ति प्राणों को संकट में डाल दे और उसके प्रतिरोध के लिए वास्तविक रक्षा करनी पड़े, तब तलवार अपरिहार्य हो जाती है। कविता में इसका प्रसंग रक्षा है; इसे अकारण हिंसा करने की अनुमति नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जब हिंस्र या क्रूर आक्रमणकारी से प्राणों की रक्षा और उसके आक्रमण का प्रतिरोध करना पड़े, तब तलवार अपरिहार्य हो जाती है।

त्वरित सुझाव: कब का उत्तर संकट की शर्त के साथ दें: प्राणरक्षा हेतु हिंसक आक्रमण का प्रतिरोध।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : नारी सुरक्षा : समस्या और समाधान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, समस्या का विवेचन, समाधान और निष्कर्ष क्रमबद्ध होने चाहिए।
- नारी सुरक्षा में शारीरिक रक्षा के साथ सम्मान, समान अवसर और भयमुक्त जीवन का अधिकार भी शामिल है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले नारी सुरक्षा का अर्थ स्पष्ट करें। फिर परिवार, सार्वजनिक स्थान और कार्यस्थल पर असुरक्षा के कारणों का विवेचन करें। समाधान में परिवार की सोच, शिक्षा, कानून के प्रभावी क्रियान्वयन और नागरिक उत्तरदायित्व को जोड़ें। भाषा औपचारिक तथा विचार क्रमबद्ध रखें। निबंध के लिए उपयुक्त शीर्षक दें और प्रत्येक अनुच्छेद में एक प्रमुख पक्ष विकसित करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध नारी सुरक्षा : समस्या और समाधान

समाज की प्रगति का वास्तविक मापदंड यह है कि उसकी महिलाएँ कितने सम्मान और निर्भयता के साथ जी सकती हैं। शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी उत्साहवर्धक है, किंतु असुरक्षा का भय आज भी उनके अवसर सीमित करता है। सुरक्षा केवल घर पहुँच जाने का नाम नहीं; अपने निर्णय लेने, काम करने और गरिमा के साथ जीवन जीने की स्वतंत्रता भी इसका अंग है।

नारी असुरक्षा के पीछे स्त्री को कमतर समझने वाली मानसिकता एक बड़ा कारण है। परिवार में लड़के और लड़की के लिए अलग नियम, महिलाओं के प्रति अपमानजनक भाषा तथा हिंसा को सामान्य मान लेना इसी सोच को बढ़ाते हैं। घरेलू हिंसा, दहेज के लिए उत्पीड़न, सार्वजनिक स्थानों पर छेड़छाड़ और कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार इसके विभिन्न रूप हैं। शिकायत करने पर पीड़िता को ही दोष देना समस्या को और गंभीर बनाता है। भय और सामाजिक बदनामी के कारण कई महिलाएँ अन्याय सहती रहती हैं।

समाधान की शुरुआत घर से होनी चाहिए। बच्चों को समानता, सहमति और दूसरों की गरिमा का सम्मान सिखाया जाए। विद्यालयों में संवेदनशील व्यवहार तथा नागरिक दायित्व पर संवाद हो। लड़कियों की शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़े, ताकि वे अपने अधिकार पहचान सकें और आवश्यकता होने पर सहायता ले सकें। परिवार को उनकी बात विश्वासपूर्वक सुननी चाहिए।

सुरक्षा व्यवस्था भी जवाबदेह होनी चाहिए। शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया सरल हो, पुलिस संवेदनशीलता से काम करे और मामलों की निष्पक्ष तथा समयबद्ध जाँच हो। सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, पर्याप्त प्रकाश और सुलभ सहायता व्यवस्था जरूरी हैं। कार्यस्थलों पर शिकायतों की प्रभावी सुनवाई तथा शिकायतकर्ता की गोपनीयता का संरक्षण हो। आत्मरक्षा का प्रशिक्षण उपयोगी है, पर सुरक्षा का पूरा भार महिलाओं पर डालना उचित नहीं है।

नागरिकों का सहयोग भी आवश्यक है। अन्याय देखकर चुप रहने के बजाय सुरक्षित ढंग से सहायता पहुँचाना, पीड़िता का साथ देना और

अपमानजनक व्यवहार का विरोध करना सामाजिक जिम्मेदारी है। संचार माध्यमों को भी महिलाओं को सम्मानपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

नारी सुरक्षा तभी संभव होगी जब कानून के साथ सामाजिक सोच भी बदलेगी। महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित करना समाधान नहीं है। समानता, न्याय और सम्मान पर आधारित वातावरण बनाकर ही हम ऐसा समाज बना सकते हैं जहाँ प्रत्येक महिला भयमुक्त होकर अपनी क्षमता का विकास कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष नारी सुरक्षा के लिए समानता पर आधारित संस्कार, प्रभावी कानून, संवेदनशील प्रशासन और समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: समस्या के प्रत्येक प्रमुख कारण के साथ व्यावहारिक समाधान जोड़ें और निष्कर्ष में सम्मान तथा स्वतंत्रता को केंद्र में रखें।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मैं कल का नहीं आज का नागरिक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट केंद्रीय विचार, अनुच्छेदों का तार्किक क्रम और उपयुक्त उदाहरण आवश्यक हैं।
- भूमिका विषय का परिचय देती है; विषय-विस्तार में तर्क तथा उदाहरण आते हैं और उपसंहार मुख्य विचार को सार्थक दिशा देता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय को भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के क्रम में प्रस्तुत करें। शीर्षक स्पष्ट रखें। प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें और अगले विचार से उसका संबंध बनाएँ।

चरण 2: विषय की सामग्री-योजना लेख का केंद्र युवाओं की सक्रिय भागीदारी, अधिकारों के साथ कर्तव्य और दैनिक जीवन में जिम्मेदारी है। विचारों को केवल नारों तक सीमित न रखकर उनके व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट करें। उपसंहार में विषय के अनुकूल सकारात्मक संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध **मैं कल का नहीं आज का नागरिक**

अक्सर युवाओं से कहा जाता है कि वे देश के भावी नागरिक हैं। यह कथन उनकी संभावनाओं को तो स्वीकार करता है, पर उनके वर्तमान योगदान को छोटा कर देता है। मैं विद्यार्थी अवश्य हूँ, किंतु समाज का अंग आज भी हूँ। मेरे व्यवहार, निर्णय और श्रम का प्रभाव मेरे परिवार, विद्यालय और देश पर अभी पड़ता है। इसलिए मैं कल का नहीं, आज का नागरिक हूँ।

नागरिकता केवल मतदान करने या पहचानपत्र प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। उसका अर्थ है समाज के प्रति जिम्मेदारी अनुभव करना और दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना। आयु कम होने पर भी मैं सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा कर सकता हूँ, यातायात के नियम मान सकता हूँ और जल तथा बिजली की बचत कर सकता हूँ। विद्यालय की मेज पर लिखना या सड़क पर कचरा फेंकना छोटी बात लग सकती है, किंतु ऐसी आदतें ही सामूहिक जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करती हैं।

आज का नागरिक होने के नाते मुझे अपने आसपास की समस्याओं से आँखें नहीं मूँदनी चाहिए। जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाना, पुस्तकें साझा करना, स्वच्छता अभियान में भाग लेना और बुजुर्गों की सहायता करना सार्थक योगदान हैं। समाज में जाति, धर्म या लिंग के आधार पर भेदभाव दिखाई दे तो उसका समर्थन करने के बजाय समानता का पक्ष लेना चाहिए। घर में लड़कियों और लड़कों के लिए समान अवसर की माँग भी जिम्मेदार नागरिकता है।

डिजिटल संसार में यह दायित्व और बढ़ जाता है। किसी संदेश को बिना जाँच के आगे भेजना अफवाह और घृणा फैला सकता है। मुझे तथ्य समझकर अपनी राय बनानी चाहिए तथा असहमति व्यक्त करते समय भी सभ्य भाषा अपनानी चाहिए। प्रश्न पूछना, समाचारों को ध्यान से पढ़ना और सार्वजनिक मुद्दों पर विचार करना लोकतंत्र में भागीदारी की तैयारी ही नहीं, उसकी वर्तमान प्रक्रिया भी है।

अधिकारों की माँग के साथ कर्तव्यों का पालन आवश्यक है। इसका अर्थ अन्याय चुपचाप सहना नहीं, बल्कि संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों से सुधार का प्रयास करना है। पढ़ाई में ईमानदारी, श्रम का सम्मान और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता मेरे दैनिक संकल्प होने चाहिए। देश का निर्माण किसी दूर के कल से आरंभ नहीं होगा। उसकी शुरुआत मेरे आज के आचरण से होगी।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार सुव्यवस्थित निबंध भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के माध्यम से विषय के केंद्रीय विचार को उदाहरणों और तर्कों सहित स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले विषय के तीन प्रमुख पक्ष चुनें और प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में उदाहरण सहित विकसित करें।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : हिंदी और उसका भविष्य [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट केंद्रीय विचार, अनुच्छेदों का तार्किक क्रम और उपयुक्त उदाहरण आवश्यक हैं।
- भूमिका विषय का परिचय देती है; विषय-विस्तार में तर्क तथा उदाहरण आते हैं और उपसंहार मुख्य विचार को सार्थक दिशा देता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय को भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के क्रम में प्रस्तुत करें। शीर्षक स्पष्ट रखें। प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें और अगले विचार से उसका संबंध बनाएँ।

चरण 2: विषय की सामग्री-योजना लेख का केंद्र हिंदी की सामाजिक भूमिका, नई तकनीक, चुनौतियाँ और विकास के उपाय है। विचारों को केवल नारों तक सीमित न रखकर उनके व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट करें। उपसंहार में विषय के अनुकूल सकारात्मक संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध **हिंदी और उसका भविष्य**

भाषा केवल विचार व्यक्त करने का साधन नहीं, समाज की स्मृति और संस्कृति की वाहक भी है। हिंदी ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने, जनभावनाओं को व्यक्त करने और साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसका भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम उसे बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप कितना उपयोगी और सृजनशील बनाते हैं।

हिंदी का व्यापक पाठक और श्रोता समाज उसकी बड़ी शक्ति है। समाचारपत्र, रेडियो, सिनेमा और टेलीविजन ने उसके प्रसार में योगदान दिया है। उसके साहित्य में ग्रामीण जीवन, सामाजिक संघर्ष, मानवीय संबंध और आधुनिक व्यक्ति की उलझनें अभिव्यक्त हुई हैं। लोकभाषाओं और बोलियों से मिलने वाली जीवंतता भी हिंदी की संपदा है। इनके प्रति सम्मान बनाए रखना हिंदी के विकास के लिए आवश्यक है।

आज तकनीक ने भाषा के सामने नए अवसर खोले हैं। कंप्यूटर और मोबाइल पर देवनागरी में लिखना, हिंदी सामग्री पढ़ना तथा विचार साझा करना संभव हुआ है। डिजिटल पुस्तकालय और शैक्षिक सामग्री दूर-दराज के विद्यार्थियों तक ज्ञान पहुँचा सकते हैं। यदि विज्ञान, कानून, चिकित्सा और व्यवसाय से संबंधित विश्वसनीय सामग्री हिंदी में उपलब्ध हो, तो अधिक लोग ज्ञान और अवसरों का लाभ उठा सकेंगे।

फिर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। कई क्षेत्रों में हिंदी को केवल घरेलू बातचीत की भाषा मान लिया जाता है। उच्च शिक्षा और रोजगार में दूसरी भाषाओं के प्रभुत्व के कारण कुछ लोग हिंदी के प्रयोग में संकोच करते हैं। दूसरी ओर अत्यधिक कठिन शब्दावली पाठक को भाषा से दूर कर देती है। अशुद्ध अनुवाद और अप्रमाणिक डिजिटल सामग्री भी समझ में बाधा डालते हैं। समाधान भाषा को कृत्रिम रूप से शुद्ध बनाने में नहीं, उसे स्पष्ट, सहज और सटीक बनाने में है।

हिंदी का भविष्य दूसरी भारतीय भाषाओं या अंग्रेजी के विरोध पर नहीं टिक सकता। बहुभाषिकता हमारी शक्ति है। अनुवाद, साहित्यिक संवाद और ज्ञान के आदान-प्रदान से सभी भाषाएँ समृद्ध होती हैं। विद्यालयों में रुचिकर शिक्षण, अच्छे पुस्तकालय, मौलिक लेखन और तकनीकी शब्दों की सरल व्याख्या हिंदी को नई पीढ़ी से जोड़ सकती है।

हिंदी का सम्मान केवल विशेष अवसरों पर भाषण देने से नहीं बढ़ेगा। हमें उसे अध्ययन, शोध, कामकाज और रचनात्मक अभिव्यक्ति में व्यवहार में लाना होगा। जब हिंदी ज्ञान, संवेदना और रोजगार की प्रभावी भाषा बनेगी, तब उसका भविष्य स्वाभाविक रूप से उज्ज्वल होगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार सुव्यवस्थित निबंध भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के माध्यम से विषय के केंद्रीय विचार को उदाहरणों और तर्कों सहित स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले विषय के तीन प्रमुख पक्ष चुनें और प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में उदाहरण सहित विकसित करें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मंगल अभियान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट केंद्रीय विचार, अनुच्छेदों का तार्किक क्रम और उपयुक्त उदाहरण आवश्यक हैं।
- भूमिका विषय का परिचय देती है; विषय-विस्तार में तर्क तथा उदाहरण आते हैं और उपसंहार मुख्य विचार को सार्थक दिशा देता है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय को भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के क्रम में प्रस्तुत करें। शीर्षक स्पष्ट रखें। प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार विकसित करें और अगले विचार से उसका संबंध बनाएँ।

चरण 2: विषय की सामग्री-योजना लेख का केंद्र भारतीय मंगल कक्षीय अभियान का उद्देश्य, उपलब्धियाँ, उपयोगिता और वैज्ञानिक दृष्टि है। विचारों को केवल नारों तक सीमित न रखकर उनके व्यावहारिक पक्ष स्पष्ट करें। उपसंहार में विषय के अनुकूल सकारात्मक संदेश दें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध **मंगल अभियान**

आकाश के रहस्य मनुष्य को सदा आकर्षित करते रहे हैं। जिज्ञासा और वैज्ञानिक प्रयासों ने उसे पृथ्वी की सीमाओं से बाहर देखने की क्षमता दी है। भारत का मंगल अभियान इसी खोजी प्रवृत्ति और आत्मविश्वास का प्रतीक है। इसने दिखाया कि स्पष्ट लक्ष्य, अनुशासित परिश्रम और स्वदेशी तकनीक के सहारे कठिन वैज्ञानिक चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने 5 नवंबर 2013 को मंगलयान का प्रक्षेपण किया। लंबी यात्रा और अनेक जटिल प्रक्रियाओं के बाद यह 24 सितंबर 2014 को मंगल की कक्षा में पहुँचा। भारत अपने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा तक पहुँचने में सफल हुआ। यह उपलब्धि वैज्ञानिकों, अभियंताओं और तकनीकी कर्मचारियों के संयुक्त परिश्रम का परिणाम थी।

अभियान का प्रमुख उद्देश्य अंतरग्रहीय यात्रा के लिए आवश्यक तकनीकों का विकास और प्रदर्शन करना था। दूर स्थित यान से संचार बनाए रखना, उसका पथ नियंत्रित करना और उचित समय पर उसे मंगल की कक्षा में स्थापित करना अत्यंत कठिन कार्य थे। इसके साथ मंगल की सतह तथा वायुमंडल का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक उपकरण भी भेजे गए। इस प्रकार अभियान तकनीकी क्षमता की परीक्षा होने के साथ वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास भी था।

मंगलयान ने देश में विज्ञान के प्रति उत्साह बढ़ाया। विद्यार्थियों को यह विश्वास मिला कि भारत में रहकर भी विश्वस्तरीय अनुसंधान किया जा सकता है। सीमित संसाधनों का समझदारी से उपयोग, सावधानीपूर्वक योजना और टीम की एकजुटता इस सफलता की प्रमुख विशेषताएँ थीं। यह उपलब्धि केवल अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की नहीं, वैज्ञानिक शिक्षा और संस्थागत प्रयासों की भी सफलता थी।

कभी पूछा जाता है कि गरीबी और अन्य सामाजिक समस्याओं वाले देश को अंतरिक्ष अनुसंधान पर खर्च क्यों करना चाहिए। यह प्रश्न संसाधनों के उचित उपयोग की याद दिलाता है, पर शिक्षा, विकास और अनुसंधान एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वैज्ञानिक कार्य से विकसित तकनीकी कौशल, प्रशिक्षित मानव संसाधन और नवाचार की संस्कृति दीर्घकाल में देश की प्रगति में सहायक बनते हैं। साथ ही अनुसंधान के लाभों को जनजीवन से जोड़ना भी आवश्यक है।

मंगल अभियान हमें उपलब्धि पर गर्व करने के साथ वैज्ञानिक सोच अपनाने की प्रेरणा देता है। प्रमाण की जाँच, प्रश्न पूछने का साहस और असफलता से सीखने की इच्छा विज्ञान की बुनियाद हैं। यदि हम इन मूल्यों को शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में स्थान दें, तो मंगलयान की सफलता भविष्य के अनेक नए प्रयासों का आधार बन सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार सुव्यवस्थित निबंध भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार के माध्यम से विषय के केंद्रीय विचार को उदाहरणों और तर्कों सहित स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले विषय के तीन प्रमुख पक्ष चुनें और प्रत्येक को अलग अनुच्छेद में उदाहरण सहित विकसित करें।

4. भारतीय युवाओं में क्रिकेट खेल के प्रति अत्यधिक लगाव की चर्चा करते हुए अन्य खेलों के प्रति उदासीनता के बारे में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर पाठकों और संबंधित संस्थाओं का ध्यान आकर्षित करता है।
- पत्र में क्रिकेट के आकर्षण, अन्य खेलों की उपेक्षा और सुधार के व्यावहारिक उपायों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और उद्देश्य प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद तथा समाचार-पत्र का पता लिखकर विषय देना चाहिए। संबोधन के बाद समस्या, उसके प्रभाव और समाधान प्रस्तुत किए जाते हैं। अंत में प्रकाशन का अनुरोध, धन्यवाद और हस्ताक्षर दिए जाते हैं।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना क्रिकेट में युवाओं की रुचि को स्वीकार करते हुए यह स्पष्ट करना उचित है कि प्रचार, विज्ञापन और सुविधाओं की असमानता दूसरे खेलों को पीछे कर रही है। विद्यालयों, खेल संस्थाओं और समाचार माध्यमों से सभी खेलों को प्रोत्साहन देने का अनुरोध किया जाएगा।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण, नई दिल्ली।
विषय: क्रिकेट के अत्यधिक आकर्षण और अन्य खेलों की उपेक्षा के संबंध में।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं भारतीय युवाओं में क्रिकेट के प्रति अत्यधिक लगाव तथा अन्य खेलों के प्रति बढ़ती उदासीनता की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। क्रिकेट रोमांचक खेल है और उसकी उपलब्धियों पर हमें गर्व है। किंतु खेल-संस्कृति को केवल इसी तक सीमित करना उचित नहीं है।
समाचार माध्यमों में क्रिकेट को व्यापक स्थान मिलता है। विज्ञापनों और पुरस्कारों से उसके खिलाड़ी युवाओं के आदर्श बन जाते हैं। दूसरी ओर हॉकी, फुटबॉल, कबड्डी और एथलेटिक्स की उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत कम दिखाई देती हैं। अनेक प्रतिभाशाली युवाओं को प्रशिक्षण, उपकरण और खेल-मैदान जैसी सुविधाएँ भी पर्याप्त नहीं मिलतीं। परिणामस्वरूप वे दूसरे खेलों में भविष्य बनाने से हिचकते हैं।
विद्यालयों में विविध खेलों की नियमित प्रतियोगिताएँ हों। खेल संस्थाएँ प्रशिक्षक और उपकरण उपलब्ध कराएँ तथा प्रायोजक अन्य खेलों का भी समर्थन करें। समाचार-पत्र और दूरदर्शन सभी खिलाड़ियों की उपलब्धियों को समुचित स्थान दें। इससे युवाओं को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार खेल चुनने का अवसर मिलेगा।
कृपया इस पत्र को प्रकाशित कर संतुलित खेल-संस्कृति के निर्माण में सहयोग दें।
धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में क्रिकेट के आकर्षण के साथ अन्य खेलों की उपेक्षा के कारण और उनके प्रोत्साहन के ठोस उपाय प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: पत्र में केवल क्रिकेट की आलोचना न करें; दूसरे खेलों के लिए सुविधाएँ, प्रतियोगिताएँ और प्रचार बढ़ाने के सुझाव अवश्य दें।

अथवा

4. दूरदर्शन केन्द्र निदेशक को प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं उनके गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए ।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निदेशक को पत्र में प्रसारण से जुड़ी शिकायत स्पष्ट, शिष्ट और तर्कपूर्ण भाषा में लिखी जाती है।
- प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता और गुणवत्ता में गिरावट के साथ सुधार के सुझाव भी देने चाहिए।

चरण 1: औपचारिक प्रारूप निर्धारित करें प्रेषक का पता और दिनांक लिखें। फिर केंद्र निदेशक का पद, दूरदर्शन केंद्र का पता, विषय और संबोधन दें। मुख्य भाग में चिंता के कारण, दर्शकों पर प्रभाव और सुधार के उपाय रखें। अंत में उचित कार्रवाई का अनुरोध तथा नाम दें।

चरण 2: पत्र की विषयवस्तु तैयार करें प्रायोजन की उपयोगिता स्वीकार करते हुए मनोरंजन में दोहराव, अनावश्यक विज्ञापन और शैक्षिक कार्यक्रमों की कमी पर ध्यान दिलाएँ। लोकहित, स्वस्थ मनोरंजन और सांस्कृतिक विविधता को प्रसारण की कसौटी बनाने का सुझाव दें।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र 18, शांति विहार
नई दिल्ली
15 मार्च, 2015
सेवा में,
केंद्र निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केंद्र, नई दिल्ली।
विषय: प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता एवं गिरते स्तर के संबंध में।
महोदय,
मैं आपके केंद्र का नियमित दर्शक हूँ। पिछले कुछ समय से प्रायोजित कार्यक्रमों की बढ़ती संख्या तथा उनके गिरते स्तर से चिंतित होकर यह पत्र लिख रहा हूँ। दूरदर्शन से दर्शकों की अपेक्षा केवल मनोरंजन की नहीं, बल्कि ज्ञान, सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक समृद्धि की भी होती है।
अनेक कार्यक्रमों में कथानक का अनावश्यक विस्तार, विषयों का दोहराव तथा सनसनी को अधिक महत्व दिया जा रहा है। बीच-बीच में आने वाले लंबे विज्ञापन कार्यक्रम की निरंतरता भंग करते हैं। बच्चों, विद्यार्थियों, किसानों और साहित्य में रुचि रखने वाले दर्शकों के लिए उपयोगी कार्यक्रमों को अपेक्षित समय नहीं मिल पाता। व्यावसायिक आकर्षण के कारण लोकहित पीछे छूटता दिखाई देता है।
प्रायोजन से आर्थिक सहायता मिलती है, किंतु कार्यक्रम के चयन की मुख्य कसौटी उसकी गुणवत्ता होनी चाहिए। कृपया विषयवस्तु की समीक्षा के लिए विशेषज्ञों की समिति बनाएँ, विज्ञापनों का समय सीमित करें और दर्शकों की प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दें। विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, लोककला तथा स्वस्थ मनोरंजन के कार्यक्रमों को उचित समय दिया जाए।
आशा है कि आप इन सुझावों पर विचार कर प्रसारण का स्तर सुधारने के लिए प्रभावी कदम उठाएँगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
राहुल शर्मा

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में प्रायोजित कार्यक्रमों की अधिकता और गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त कर गुणवत्ता, लोकहित और प्रसारण-संतुलन सुधारने के सुझाव दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: निदेशक को पत्र लिखते समय शिकायत के साथ प्रसारण-योग्य ठोस सुझाव दें और पूरे पत्र में शिष्ट भाषा बनाए रखें।

5(क). डैड लाइन किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र का प्रकाशन निश्चित समय-सारिणी के अनुसार होता है।
- समाचार-सामग्री स्वीकार करने की अंतिम समय-सीमा को डेडलाइन कहते हैं।

चरण 1: परिभाषा दें डेडलाइन वह निर्धारित अंतिम समय है, जिसके पहले समाचार या अन्य सामग्री समाचार-पत्र के कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।

चरण 2: समय-सीमा का महत्व समझें इसके बाद सामग्री के संपादन, पृष्ठ-सज्जा और मुद्रण का काम पूरा किया जाता है। समय पर सामग्री न मिलने से प्रकाशन प्रभावित हो सकता है; इसलिए पत्रकारों को इस सीमा का पालन करना पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार या अन्य सामग्री कार्यालय में पहुँचने की निर्धारित अंतिम समय-सीमा डेडलाइन कहलाती है।

त्वरित सुझाव: डेडलाइन की परिभाषा में अंतिम समय-सीमा और समाचार-सामग्री पहुँचने की बात अवश्य लिखें।

5(ख). वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र में पत्रकारिता सत्ता और सार्वजनिक संस्थाओं के कामकाज पर निगरानी रखती है।
- वॉचडॉग पत्रकारिता का आधार जनहित में जवाबदेही सुनिश्चित करना है।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट करें सरकार और अन्य शक्तिशाली संस्थाओं के कामकाज पर सतर्क निगरानी रखकर उनकी गड़बड़ियों, भ्रष्टाचार या सत्ता के दुरुपयोग को उजागर करना वॉचडॉग पत्रकारिता है।

चरण 2: उद्देश्य बताएँ यह पत्रकारिता जनता को सचेत करती है और जिम्मेदार व्यक्तियों से जवाब माँगती है। इसकी भूमिका चौकीदार की तरह जनहित की रक्षा करना है; इसका आशय किसी संस्था का प्रचार करना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सत्ता और सार्वजनिक संस्थाओं पर निगरानी रखकर उनकी गड़बड़ियों को जनहित में उजागर करने वाली पत्रकारिता वॉचडॉग पत्रकारिता कहलाती है।

त्वरित सुझाव: वॉचडॉग को चौकीदार से जोड़कर याद करें: निगरानी, गड़बड़ियों का खुलासा और जनहित इसकी मुख्य बातें हैं।

5(ग). सम्पादक के कार्य लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक समाचार-पत्र की संपादकीय सामग्री और उसकी नीति के संचालन के लिए उत्तरदायी होता है।
- समाचारों का चयन, संपादन और प्रस्तुति उसकी प्रमुख जिम्मेदारियों में आते हैं।

चरण 1: सामग्री से संबंधित कार्य संपादक समाचारों तथा लेखों का चयन करता है, उनकी तथ्यात्मक शुद्धता और भाषा की जाँच कराता है तथा आवश्यक संपादन और शीर्षक-निर्धारण की व्यवस्था करता है।

चरण 2: नीति और समन्वय से संबंधित कार्य वह समाचार-पत्र की संपादकीय नीति निर्धारित करता है तथा संपादकीय विभाग के कार्य का निर्देशन और समन्वय करता है। सामग्री का महत्व, स्थान और प्रस्तुति तय करना भी उसके दायित्वों में शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादक के प्रमुख कार्य समाचार-सामग्री का चयन और संपादन, संपादकीय नीति का निर्धारण तथा संपादकीय विभाग का निर्देशन और समन्वय हैं।

त्वरित सुझाव: कार्य पूछे जाने पर चयन, संपादन और नीति-निर्देशन जैसे स्पष्ट कार्य लिखें; केवल संपादक की परिभाषा न दें।

5(घ). पत्रकार किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में जनहित की सूचनाएँ एकत्र करके उनकी जाँच की जाती है और उन्हें जनता तक पहुँचाया जाता है।
- पत्रकार का कार्य सत्य, विश्वसनीयता और निष्पक्षता पर आधारित होता है।

चरण 1: पत्रकार के कार्य को पहचानिए समाज में घटने वाली घटनाओं और जनजीवन से जुड़े विषयों के बारे में समाचार जुटाना पत्रकार का मूल कार्य है। वह लोगों से बातचीत, प्रत्यक्ष अवलोकन और दस्तावेजों से जानकारी प्राप्त करता है।

चरण 2: परिभाषा लिखिए जो व्यक्ति समाचारों और सूचनाओं का संकलन, सत्यापन, लेखन या संपादन करके उन्हें समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन अथवा अन्य जनसंचार माध्यमों द्वारा जनता तक पहुँचाता है, उसे पत्रकार कहते हैं। केवल अफवाह फैलाने वाला व्यक्ति इस अर्थ में पत्रकार नहीं है; तथ्यपरक सूचना उसका आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचारों का संकलन, सत्यापन और लेखन करके उन्हें जनसंचार माध्यमों से जनता तक पहुँचाने वाला व्यक्ति पत्रकार कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में समाचार जुटाना, उनकी जाँच करना और जनता तक पहुँचाना—इन कार्यों का उल्लेख करें।

5(ङ). ब्रेकिंग न्यूज का क्या आशय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ब्रेकिंग न्यूज ताजातरीन और महत्त्वपूर्ण घटना की तत्काल दी जाने वाली खबर है।
- समाचार की तात्कालिकता के साथ तथ्य की पुष्टि भी आवश्यक है।

चरण 1: पद का आशय समझिए टेलीविजन पर जब कोई अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना अभी-अभी घटती है या उसकी नई जानकारी मिलती है, तो दर्शकों को उसकी सूचना शीघ्र दी जाती है। ऐसी खबर के लिए अगली नियमित समाचार बुलेटिन की प्रतीक्षा नहीं की जाती।

चरण 2: परिभाषा स्पष्ट कीजिए किसी महत्त्वपूर्ण ताजा घटना के समाचार को नियमित कार्यक्रम या समाचारों का क्रम रोककर तत्काल प्रसारित करना ब्रेकिंग न्यूज कहलाता है। उदाहरण के लिए किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा की पुष्ट सूचना इस रूप में दी जा सकती है। हर पुरानी या सामान्य खबर को बार-बार दिखाने मात्र से वह ब्रेकिंग न्यूज नहीं बन जाती।

चरण 3: निष्कर्ष ब्रेकिंग न्यूज का आशय किसी महत्त्वपूर्ण ताजा घटना की खबर को नियमित प्रसारण के बीच तत्काल प्रसारित करने से है।

त्वरित सुझाव: ब्रेकिंग न्यूज की पहचान के लिए ताजा घटना, महत्त्व और तत्काल प्रसारण—तीनों बातों को जोड़ें।

6. 'आँखों देखा जलप्रलय' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषयानुकूल शीर्षक, लेखक का नाम, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक निष्कर्ष होना चाहिए।
- प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित आलेख में दृश्य-वर्णन के साथ मानवीय संवेदना और समस्या पर विचार भी आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा शीर्षक के नीचे लेखक का नाम लिखेंगे। आरंभ में वर्षा और अचानक बढ़ते पानी का प्रसंग आएगा। मध्य में जलप्रलय का प्रत्यक्ष दृश्य, जनजीवन की कठिनाइयाँ और राहत कार्यों का वर्णन होगा। अंत में बचाव तथा तैयारी की आवश्यकता पर विचार रखा जाएगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना घटनाओं को सुबह से शाम तक स्वाभाविक क्रम में रखा जाए। पानी का फैलना, लोगों का सुरक्षित स्थान पर जाना, बच्चों और बुजुर्गों की परेशानी तथा आपसी सहयोग प्रमुख बिंदु होंगे। अनुभव को प्रभावी बनाने के लिए ठोस दृश्य रखें, लेकिन सनसनीखेज अतिशयोक्ति से बचें। यह एक प्रत्यक्षदर्शी अनुभव का आदर्श आलेख है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख आँखों देखा जलप्रलय

लेखक : एक प्रत्यक्षदर्शी

पिछले वर्ष बरसात के दिनों में मुझे बाढ़ का ऐसा भयावह दृश्य देखने को मिला, जिसे भूलना कठिन है। रात भर मूसलाधार वर्षा होती रही। सुबह जब मैं घर की छत पर पहुँचा, तो सामने की सड़क दिखाई ही नहीं दे रही थी। चारों ओर मटमैले पानी का विशाल फैलाव था। जिस मैदान में बच्चे खेलते थे, वहाँ अब लकड़ियाँ और घरेलू सामान बह रहे थे।

कुछ ही घंटों में निचले घरों में पानी घुस गया। लोग अनाज, कपड़े और जरूरी कागज बचाकर ऊपरी मंजिलों पर पहुँचाने लगे। एक परिवार अपने छोटे बच्चों और बुजुर्ग माँ को लेकर छत पर बैठा सहायता की प्रतीक्षा कर रहा था। पशुओं की बेचैन आवाजें और मदद के लिए उठती पुकारें वातावरण को और भी करुण बना रही थीं। बिजली बंद थी और पीने के स्वच्छ पानी की कमी होने लगी थी।

दोपहर को बचाव दल नाव लेकर आया। स्थानीय युवकों ने भी रस्सियों की सहायता से लोगों को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया। पास के विद्यालय में बने राहत शिविर में स्वयंसेवक भोजन, पानी और दवाइयाँ बाँट रहे थे। संकट की घड़ी में अनजान लोग भी एक-दूसरे का सहारा बन गए।

इस अनुभव ने समझाया कि आपदा केवल घर और सड़कें नहीं उजाड़ती, लोगों की सुरक्षा और आजीविका भी छीन लेती है। नालों की नियमित सफाई, जलनिकासी की उचित व्यवस्था, समय पर चेतावनी और स्थानीय बचाव प्रशिक्षण आवश्यक हैं। प्रकृति के प्रति संवेदनशील योजना तथा सामूहिक तैयारी ही ऐसे संकटों का सामना करने की शक्ति दे सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख प्रत्यक्ष अनुभव के क्रमबद्ध वर्णन को मानवीय संवेदना, राहत कार्यों और आपदा से बचाव के विचार से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य-वर्णन के बाद लोगों पर प्रभाव और अंत में बचाव का सुझाव जोड़ें, ताकि आलेख केवल घटना का बयान न रह जाए।

अथवा

6(1). 'टूटते-बिखरते रिश्ते' पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के आलेख में समस्या, उसके कारण, प्रभाव और समाधान का क्रम रखा जाता है।
- रिश्तों पर विचार करते समय संवाद, विश्वास, सहानुभूति और पारस्परिक सम्मान को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और भूमिका तय कीजिए प्रभावी शीर्षक और लेखक के नाम के बाद रिश्तों की मानवीय आवश्यकता का परिचय दिया जाएगा। भूमिका से यह स्पष्ट होगा कि सुविधा बढ़ने पर भी भावनात्मक दूरी क्यों चिंता का विषय है। भाषा सहज और विचार संतुलित

रखे जाएँगे।

चरण 2: विचारों की योजना बनाइए मुख्य भाग में व्यस्तता, स्वार्थ, तुलना, संवाद की कमी और पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी का विश्लेषण होगा। उनके कारण पैदा होते अकेलेपन और अविश्वास का उल्लेख करेंगे। समाधान के रूप में समय देना, संवेदनशील संवाद, सहयोग और मतभेदों का सम्मान शामिल होगा। परिवार के सभी सदस्यों को समान गरिमा देना आवश्यक है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श आलेख टूटते-बिखरते रिश्ते

लेखक : अजय

रिश्ते मनुष्य के जीवन को अपनापन और सुरक्षा देते हैं। सुख बाँटने और दुख में सहारा पाने का सबसे निकट आधार परिवार तथा मित्र होते हैं। फिर भी आज अनेक घरों में साथ रहते हुए भी लोगों के बीच दूरी दिखाई देती है। संवाद के स्थान पर चुप्पी और विश्वास के स्थान पर संदेह बढ़ना गंभीर सामाजिक चिंता है।

इस स्थिति का एक कारण जीवन की अत्यधिक व्यस्तता है। काम और सफलता की दौड़ में हम अपनों के लिए समय निकालना भूल जाते हैं। मोबाइल पर दूर बैठे लोगों से संपर्क बना रहता है, लेकिन सामने बैठे व्यक्ति की बात सुनने का धैर्य घट जाता है। आर्थिक तुलना और दिखावे की प्रवृत्ति भी संबंधों में अनावश्यक तनाव पैदा करती है। जब हर व्यवहार को लाभ-हानि से आँका जाता है, तो आत्मीयता कमजोर होने लगती है।

पीढ़ियों के बीच मतभेद स्वाभाविक हैं, पर उन्हें अनादर का कारण नहीं बनाना चाहिए। बड़ों का अनुभव उपयोगी है और युवाओं की स्वतंत्र आकांक्षाएँ भी सम्मान की अधिकारी हैं। एक-दूसरे पर निर्णय थोपना तथा घरेलू जिम्मेदारियों का असमान बोझ रिश्तों को चोट पहुँचाता है। इसका परिणाम अकेलेपन, असुरक्षा और भावनात्मक तनाव के रूप में सामने आता है।

संबंध बचाने के लिए बड़े उपहारों से अधिक नियमित समय और सच्ची संवेदना आवश्यक हैं। परिवार के सदस्य प्रतिदिन कुछ समय बातचीत में बिताएँ, एक-दूसरे की कठिनाइयाँ समझें और जिम्मेदारियाँ बाँटें। गलती स्वीकार करना, क्षमा माँगना तथा दूसरे की निजी सीमा का सम्मान करना भी जरूरी है। स्वस्थ रिश्ता भय या दबाव से नहीं, बराबरी और विश्वास से टिकता है।

रिश्ते अपने-आप मजबूत नहीं बने रहते; उन्हें निरंतर देखभाल चाहिए। यदि हम सुनना, समझना और साथ देना सीखें, तो टूटते संबंधों में फिर से अपनापन लौट सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष रिश्तों को सँभालने के लिए संवाद, समय, समान सम्मान और विश्वास का व्यवहार में पालन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: कारण गिनाने के बाद प्रत्येक प्रमुख समस्या से जुड़ा व्यावहारिक उपाय लिखें और किसी एक पीढ़ी को दोषी न ठहराएँ।

अथवा

6(2). हाल ही में पढ़े किसी मनोरंजक कहानी संग्रह की समीक्षा कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुस्तक-समीक्षा में रचनाकार, विषयवस्तु, भाषा-शैली और पाठकीय प्रभाव का संतुलित मूल्यांकन किया जाता है।
- कहानी का पूरा कथानक सुनाने के स्थान पर उदाहरण देकर संग्रह की विशेषताएँ और सीमाएँ स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: समीक्षा का प्रारूप और सामग्री समीक्षा को आकर्षक शीर्षक दें। आरंभ में कहानी-संग्रह और लेखक का परिचय दें; फिर चुनी हुई कहानियों के आधार पर मनोरंजकता, पात्रों की स्वाभाविकता, सामाजिक दृष्टि और भाषा का विवेचन करें। अंत में अपनी पाठकीय राय दें। यहाँ प्रेमचंद के प्रसिद्ध संग्रह मानसरोवर की समीक्षा प्रस्तुत है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श समीक्षा **जीवन के विविध रंग : मानसरोवर की समीक्षा**

हाल ही में मैंने प्रेमचंद के कहानी-संग्रह मानसरोवर पढ़ा। इन कहानियों में मनोरंजन के साथ भारतीय जीवन की सच्ची झलक मिलती है। साधारण मनुष्य की इच्छाएँ, संघर्ष और मानवीय संबंध पाठक को बाँध लेते हैं।

ईदगाह में हामिद का अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदना बालमन की संवेदनशीलता को उजागर करता है। मेले की चहल-पहल और बच्चों की बातचीत रोचक हैं, किंतु अंत पाठक को भीतर तक छू जाता है। नमक का दारोगा में वंशीधर की ईमानदारी तथा पंडित अलोपीदीन के

धनबल का संघर्ष उत्सुकता बनाए रखता है। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद नैतिक प्रश्नों को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ते हैं।

संग्रह की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और मुहावरों से समृद्ध है। संवाद पात्रों के स्वभाव के अनुकूल हैं। कथानक की रोचकता के साथ करुणा, हास्य और व्यंग्य का मेल पढ़ने का आनंद बढ़ाता है। लेखक की सामाजिक दृष्टि पाठक को अपने आसपास के जीवन पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

कुछ स्थानों पर स्पष्ट नैतिक संदेश आज के पाठक को उपदेशात्मक लग सकता है। फिर भी जीवंत पात्र और गहरी मानवीय संवेदना इस सीमा को पीछे छोड़ देते हैं। मेरे लिए यह संग्रह मनोरंजन और जीवन-बोध का सुंदर संगम रहा। अच्छी हिंदी कहानियाँ पढ़ने के इच्छुक विद्यार्थियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मानसरोवर की यह समीक्षा परिचय, उदाहरण, गुण-दोष और पाठकीय अनुशंसा को समेटती है। संग्रह की रोचकता का आधार केवल घटनाएँ नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना भी है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में दो कहानियों के ठोस उदाहरण दें और कथासार के बजाय भाषा, प्रभाव तथा अपनी संतुलित राय पर ध्यान रखें।

---

7. 'जंक फूड की समस्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी जनजीवन से जुड़े विषय को रोचक आरंभ, दृश्यात्मक भाषा और मानवीय अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।
- समस्या के कारण, जीवन पर उसका प्रभाव और व्यावहारिक समाधान एक सहज क्रम में आने चाहिए; अप्रमाणित आँकड़े नहीं देने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना आकर्षक शीर्षक तथा लेखक-पंक्ति के बाद स्कूल के बाहर का एक परिचित दृश्य लें। स्वाद और विज्ञापन के आकर्षण से जंक फूड की आदत तक पहुँचें। फिर संतुलित आहार की उपेक्षा और भोजन की बदलती आदतों पर चर्चा करें। अंत में परिवार, विद्यालय और बच्चों की साझा भूमिका बताएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **स्वाद की चमक में खोता संतुलन**

लेखक : एक विद्यार्थी

छुट्टी की घंटी बजते ही स्कूल के बाहर की दुकान पर भीड़ जुट जाती है। किसी के हाथ में चिप्स का पैकेट है, किसी के पास बर्गर और ठंडा पेय। उधर बस्ते में रखा घर का टिफिन अब भी बंद है। यह दृश्य हमारे बदलते भोजन की कहानी कहता है।

चटपटा स्वाद, रंगीन पैकिंग और आकर्षक विज्ञापन बच्चों को आसानी से लुभाते हैं। जल्दी मिल जाने वाला भोजन व्यस्त परिवारों को सुविधाजनक भी लगता है। दोस्तों के साथ खाने की चाह इस आकर्षण को और बढ़ाती है। धीरे-धीरे कभी-कभार की पसंद रोज की आदत बन जाती है।

समस्या किसी एक पकवान के नाम में नहीं, बल्कि ऐसे भोजन पर निर्भरता में है जिसमें नमक, चीनी या वसा अधिक हो और पोषण का संतुलन बिगड़ जाए। जब वह फल, सब्जी, दाल और घर के भोजन की जगह लेने लगे, तब चिंता आवश्यक है। स्वाद की तात्कालिक खुशी भोजन की विविधता का विकल्प नहीं हो सकती।

समाधान केवल डाँटने या टिफिन थमाने में नहीं है। घर का भोजन स्वादिष्ट और विविध बनाया जाए। फल, भुने चने और पौष्टिक नाश्ते सहज उपलब्ध हों। बच्चे पैकेट पर लिखी सामग्री पढ़ना सीखें और विज्ञापन को पोषण की गारंटी न समझें। स्कूल की कैंटीन में भी संतुलित विकल्प मिलें।

अगली छुट्टी में यदि दोस्तों की टोली अपना टिफिन साझा करे, तो बदलाव की शुरुआत हो सकती है। भोजन पेट भरने के साथ शरीर की आवश्यकता भी पूरी करे; स्वाद और समझ की यही दोस्ती हमें चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर परिचित दृश्य से शुरू होकर जंक फूड के आकर्षण, असंतुलित भोजन की समस्या और सामूहिक समाधान तक पहुँचता है। इसका संदेश भोजन के प्रति समझदारी विकसित करना है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर को नारे से नहीं, किसी जीवंत दृश्य से शुरू करें; उसी दृश्य से समस्या और समाधान की कड़ी जोड़ें।

7(OR). 'स्वच्छता अभियान' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में किसी सामाजिक अभियान को लोगों के अनुभव, दैनिक जीवन के दृश्यों और प्रभावी भाषा से जीवंत बनाया जाता है।
- स्वच्छता का अर्थ केवल एक बार सफाई करना नहीं, बल्कि कचरे के उचित प्रबंधन और नियमित नागरिक व्यवहार को अपनाना भी है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक और लेखक-पंक्ति दें। मोहल्ले की सुबह का दृश्य लेकर स्वच्छता अभियान में लोगों की भागीदारी दिखाएँ। सार्वजनिक स्थानों, कचरे के पृथक्करण, सफाईकर्मियों के सम्मान और नियमित व्यवस्था पर बात करें। समापन में अभियान को रोजमर्रा की आदत बनाने का संदेश दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श फ़ीचर **झाड़ू से आगे बढ़ती स्वच्छता की कहानी**

लेखक : एक विद्यार्थी

रविवार की सुबह मोहल्ले की गली में कुछ अलग हलचल है। बच्चे दस्ताने पहनकर कागज चुन रहे हैं। बड़े कूड़ेदान रख रहे हैं और सफाईकर्मी सबको कचरा अलग रखने का तरीका समझा रहे हैं। कल तक जिस कोने से लोग नाक ढककर गुजरते थे, वहाँ आज रास्ता साफ दिखाई देता है। स्वच्छता अभियान का यह छोटा दृश्य एक बड़ी उम्मीद जगाता है।

हम अक्सर अपने घर को चमकाते हैं, पर दरवाजे के बाहर का कचरा किसी और की जिम्मेदारी मान लेते हैं। सड़क, पार्क और नाली भी हमारे साझा जीवन का हिस्सा हैं। सार्वजनिक स्थानों की सफाई तभी टिकेगी जब नागरिक अपनी आदतों पर ध्यान देंगे और स्थानीय व्यवस्था नियमित रूप से काम करेगी।

गीले और सूखे कचरे को अलग रखना, निर्धारित स्थान पर कचरा देना तथा नालियों में प्लास्टिक न फेंकना आसान शुरुआत हैं। जहाँ संभव हो, जैविक कचरे से खाद बनाई जा सकती है। सार्वजनिक शौचालयों का सही उपयोग और उनकी नियमित देखभाल भी उतनी ही जरूरी है।

इस अभियान के असली साथी सफाईकर्मी हैं। उनके श्रम का सम्मान, उचित सुरक्षा-साधन और नागरिकों का सहयोग आवश्यक है। तस्वीर खिंचवाने के बाद जिम्मेदारी समाप्त नहीं होनी चाहिए। कूड़ा उठाने की नियमित व्यवस्था तथा मोहल्ले और विद्यालय की निगरानी अभियान को टिकाऊ बनाती है।

शाम तक गली साफ हो गई है। असली परीक्षा कल सुबह होगी, जब कोई व्यक्ति खाली पैकेट फेंकने से पहले रुकेगा। स्वच्छता का सपना उसी क्षण सच होना शुरू होगा। अभियान की सफलता झाड़ू उठाने में भी है और कचरा फैलाने की आदत छोड़ने में भी।

चरण 3: निष्कर्ष स्वच्छता अभियान की सार्थकता नागरिक भागीदारी, सफाईकर्मियों के सम्मान और नियमित कचरा-प्रबंधन में है। फ़ीचर इसे दैनिक जीवन के दृश्य से जोड़कर प्रभावी बनाता है।

त्वरित सुझाव: स्वच्छता पर फ़ीचर लिखते समय केवल अपील न करें; कचरा अलग करने और नियमित व्यवस्था जैसे ठोस व्यवहार भी दिखाएँ।

8. ज़िन्दगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है ।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह, अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है
संवेदन तुम्हारा है । [8 अंक]

8(क). कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार क्यों करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि अपने जीवन की परिस्थितियों को प्रिय व्यक्ति के स्नेह और संवेदना से जुड़ा हुआ अनुभव करता है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: जीवन की सहर्ष स्वीकृति कवि कहता है कि जीवन में जो कुछ उसका अपना है, वह प्रिय को भी प्यारा है। इसलिए सुख हो या कठिनाई, उसे अपने जीवन का कोई पक्ष अस्वीकार्य नहीं लगता। उसकी स्वीकृति के मूल में प्रिय के प्रति आत्मीय विश्वास है।

चरण 2: अभाव और अनुभवों का मूल्य गरीबी, गंभीर अनुभव, विचारों की संपन्नता और आंतरिक दृढ़ता में कवि को प्रिय की संवेदना दिखाई देती है। इस आत्मीय संबंध से कठिन परिस्थितियाँ भी सार्थक बन जाती हैं और वह उन्हें प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रिय की संवेदना और स्नेह से अपने समूचे जीवन को जुड़ा पाकर कवि उसकी प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार करता है।

त्वरित सुझाव: सहर्ष स्वीकृति का कारण बताते समय 'वह तुम्हें प्यारा है' को प्रिय की संवेदना से जोड़ें।

8(ख). गरीबी के लिए प्रयुक्त विशेषण का औचित्य और सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गरीबी के साथ प्रयुक्त विशेषण के अर्थ और उससे उत्पन्न काव्य-सौंदर्य को समझना आवश्यक है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: विशेषण का अर्थ कवि ने गरीबी के लिए 'गरबीली' विशेषण का प्रयोग किया है। इसका आशय ऐसी गरीबी से है जिसमें दीनता या हीनता के स्थान पर आत्मसम्मान और गरिमा विद्यमान है। आर्थिक अभाव कवि की आंतरिक समृद्धि को नष्ट नहीं कर पाते।

चरण 2: औचित्य और सौंदर्य गंभीर अनुभव, विचार-वैभव और दृढ़ता कवि के व्यक्तित्व की संपदा हैं। इसलिए उसकी गरीबी भी गर्व का विषय है। सामान्यत: गरीबी और गर्व विरोधी प्रतीत होते हैं; उनके संयोजन से विरोधाभास का सौंदर्य और आत्मसम्मान का प्रभावपूर्ण चित्र उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'गरबीली' विशेषण गरीबी में भी विद्यमान स्वाभिमान को व्यक्त करता है तथा विरोधाभास द्वारा कथन को सुंदर और

प्रभावी बनाता है।

त्वरित सुझाव: पहले 'गरबीली' का अर्थ स्वाभिमानयुक्त लिखें; फिर गरीबी और गर्व के विरोधाभास से सौंदर्य स्पष्ट करें।

8(ग). कवि किन्हें नवीन और मौलिक मानता है तथा क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि की आंतरिक संपदा और उसे नवीन बनाने वाली संवेदना का संबंध स्पष्ट करना है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: मौलिकता का आधार कवि अपनी स्वाभिमानपूर्ण गरीबी, गंभीर जीवन-अनुभवों, विचार-वैभव, दृढ़ता और भीतर बहने वाली भावनाओं की सरिता को अभिनव तथा मौलिक मानता है। ये सब उसके अपने व्यक्तित्व और जीवनानुभव के अंग हैं।

चरण 2: नवीनता का कारण कवि के अनुसार उसके भीतर पल-पल जागने वाली सजग संवेदना प्रिय की देन है। उसी की प्रेरणा से अनुभव और विचार नया अर्थ पाते हैं। वे केवल उधार लिए हुए विचार नहीं, बल्कि आत्मीय संवेदना से उपजी अपनी अनुभूतियाँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने अनुभवों, विचारों, दृढ़ता और भाव-जगत को नवीन एवं मौलिक मानता है, क्योंकि उनके भीतर प्रिय की जीवंत संवेदना काम करती है।

त्वरित सुझाव: पहले गरीबी, अनुभव, विचार और दृढ़ता की सूची दें; फिर 'संवेदन तुम्हारा है' से उनकी मौलिकता का कारण जोड़ें।

8(घ). 'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है' – इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस कथन में प्रिय के प्रति आत्मीयता और जीवन की समग्र स्वीकृति का भाव व्यक्त हुआ है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: कथन का संदर्भ 'जो कुछ भी मेरा है' में कवि का संपूर्ण जीवन समाया है। इसमें उसकी गरीबी, अनुभव, विचार, दृढ़ता तथा भावनाएँ सभी आते हैं। प्रिय इन सबको स्नेह से स्वीकार करता है; उसका लगाव केवल कवि की सुखद या संपन्न स्थितियों तक सीमित नहीं है।

चरण 2: आत्मीय स्वीकृति का प्रभाव प्रिय के इसी समावेशी स्नेह से कवि अपने जीवन के अभावों और संघर्षों को भी मूल्यवान समझता है। उसे अपने अनुभवों में प्रिय की संवेदना का स्पर्श दिखाई देता है। अत: वह परिस्थितियों के प्रति शिकायत के स्थान पर सहर्ष स्वीकृति का भाव रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि प्रिय को कवि का समूचा जीवन प्यारा है; इसी आत्मीय स्वीकृति से कवि अपनी सभी परिस्थितियों को सहर्ष अपना लेता है।

त्वरित सुझाव: 'जो कुछ भी मेरा है' में गरीबी, अनुभव, विचार और दृढ़ता को शामिल करके प्रिय की समग्र स्वीकृति समझाएँ।

अथवा

8. पतंगों के साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास । [8 अंक]

8(क). सुनहले सूरज के सामने आने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सूरज के सामने आने का बिंब बच्चों के साहस, उल्लास और निर्भीक सक्रियता को व्यक्त करता है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: बिंब का भाव बच्चे पतंग उड़ाते हुए छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बच जाते हैं, तो भयभीत होकर पीछे नहीं हटते। वे पहले से अधिक निडर होकर फिर खुले आकाश की ओर उन्मुख होते हैं। 'सुनहला सूरज' उनके सामने फैले उज्ज्वल और आकर्षक संसार का बिंब बनता है।

चरण 2: निर्भीकता की अभिव्यक्ति सूरज के सामने आने का आशय बच्चों का उत्साह और आत्मविश्वास लेकर फिर खेल में जुटना है। दुर्घटना का अनुभव उनके उल्लास को समाप्त नहीं करता। कवि इस बिंब से उनके जीवन के प्रति खुलेपन और जोखिम से न घबराने की प्रवृत्ति को उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष सुनहले सूरज के सामने आने से आशय है कि बच्चे गिरकर बचने के बाद अधिक निर्भीक और उत्साही होकर फिर पतंग उड़ाने में जुट जाते हैं।

त्वरित सुझाव: सुनहले सूरज के बिंब को गिरने के बाद बच्चों की बढ़ी निर्भीकता और दोबारा खेल में जुटने से जोड़ें।

8(ख). गिरकर बचने पर बच्चों में क्या प्रतिक्रिया होती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में गिरने से बच जाने के बाद बच्चों के मनोभाव में आए परिवर्तन को बताना है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: घटना और प्रतिक्रिया छत के खतरनाक किनारों से गिरकर सुरक्षित बच जाने पर बच्चों के मन में भय स्थायी नहीं होता। इसके विपरीत उनका साहस बढ़ जाता है। उन्हें लगता है कि वे खतरे से निकल सकते हैं, इसलिए वे और अधिक निडर हो जाते हैं।

चरण 2: खेल के प्रति बढ़ा उत्साह वे खेल छोड़कर बैठने के बजाय फिर पतंगों की दुनिया में सक्रिय हो जाते हैं। 'और भी निडर होकर' उनकी इसी प्रतिक्रिया को स्पष्ट करता है। उनके भीतर का उल्लास और बेचैनी उन्हें नए उत्साह से आकाश की ओर देखने तथा दौड़ने के लिए प्रेरित करती है।

चरण 3: निष्कर्ष गिरकर बच जाने पर बच्चों का आत्मविश्वास और साहस बढ़ता है; वे अधिक निडर होकर दोबारा पतंग उड़ाने लगते हैं।

त्वरित सुझाव: 'और भी निडर होकर' पर ध्यान दें: बच्चों की प्रतिक्रिया में डर के बजाय बढ़ा साहस और आत्मविश्वास लिखें।

8(ग). पैरों को बेचैन क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बेचैन पैर' बच्चों के भीतर भरे उत्साह का शारीरिक अभिव्यक्ति के रूप में चित्रण है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: बेचैनी का कारण बच्चे पतंग उड़ाने में इतने तल्लीन हैं कि एक स्थान पर स्थिर नहीं रह सकते। पतंग की गति के साथ उनकी इच्छा भी आकाश में दौड़ती है। वे उसे सँभालने और उसके साथ खेलते रहने के लिए लगातार इधर-उधर दौड़ते हैं।

चरण 2: गतिशीलता का काव्य-चित्र उनके भीतर का उल्लास, उमंग और उत्सुकता पैरों की चंचलता में दिखाई देती है। इसीलिए पैरों को बेचैन कहा गया है। पृथ्वी का उनके पैरों के पास तेज घूमती हुई आना इसी तीव्र गतिशील अनुभव का चित्र है, न कि किसी भय या दुख से उत्पन्न बेचैनी का।

चरण 3: निष्कर्ष पतंग उड़ाने के उत्साह और निरंतर दौड़ने की चंचलता के कारण बच्चों के पैरों को बेचैन कहा गया है।

त्वरित सुझाव: बेचैन पैरों को पतंग के साथ दौड़ते बच्चों के उल्लास और चंचलता से जोड़कर कारण बताएँ।

8(घ). "पतंगों के सहारे वे भी उड़ रहे हैं" – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस पंक्ति में पतंगों के साथ बच्चों की कल्पना और मन के उड़ने का भाव समझना है।
- उत्तर में काव्यांश के शब्दों को उनके प्रसंग से जोड़कर भाव स्पष्ट किया जाता है।
- काव्य-भाषा के संकेतों से भाव ग्रहण करें; शब्दों के केवल बाहरी अर्थ के बजाय वक्ता की मन:स्थिति और पूरे प्रसंग का ध्यान रखें।

चरण 1: कल्पना और तन्मयता बच्चे धरती या छत पर रहकर पतंग उड़ाते हैं, पर खेल में उनकी तन्मयता इतनी गहरी होती है कि उन्हें स्वयं भी उड़ने का आनंद मिलता है। आकाश में जाती पतंग के साथ उनकी इच्छाएँ और कल्पनाएँ भी ऊँचाइयों तक पहुँचती हैं।

चरण 2: भाव की व्यंजना यह वास्तविक शारीरिक उड़ान नहीं, बल्कि मन की मुक्त और उल्लासपूर्ण गति है। बच्चे पतंग से अपने को एकाकार अनुभव करते हैं। उनका उत्साह, निर्भीकता और बालसुलभ कल्पनाशीलता उन्हें सीमाओं से ऊपर उठकर खुलापन अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि पतंग उड़ाते समय बच्चे कल्पना और मन से उसके साथ आकाश में उड़ने जैसी मुक्ति तथा आनंद का अनुभव करते हैं।

त्वरित सुझाव: बच्चों की वास्तविक स्थिति छत पर और कल्पना की उड़ान आकाश में दिखाकर पतंग से उनकी तन्मयता स्पष्ट करें।

9. प्रभु प्रताप सुनि कान
विकल भए वानर निकर
आइ गयउ हनुमान
जिमि करुना महँ वीर रस । [6 अंक]

9(क). भाषा प्रयोग की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की भाषा पहचानते समय उसके शब्दरूप और वाक्य-विन्यास देखे जाते हैं।
- रस के अनुकूल शब्द-चयन भाषा की प्रभावशीलता बढ़ाता है।

चरण 1: अवधी के लोकप्रचलित रूप इस काव्यांश की पहली विशेषता अवधी का सहज और प्रवाहपूर्ण प्रयोग है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ', 'जिमि' और 'महँ' जैसे शब्द अवधी के विशिष्ट रूप हैं। इनके कारण कथन बोलचाल के निकट तथा स्वाभाविक बनता है। छोटे वाक्य घटनाओं को सीधे प्रस्तुत करते हैं और भाव ग्रहण करने में बाधा नहीं डालते।

चरण 2: भावानुकूल और लयात्मक भाषा दूसरी विशेषता भावों के अनुकूल संक्षिप्त, चित्रात्मक और लययुक्त अभिव्यक्ति है। 'विकल भए वानर निकर' वानर-समूह की व्याकुलता को मूर्त कर देता है। इसके बाद हनुमान के आगमन को करुणा के बीच वीर रस के आने से जोड़ने वाला कथन वातावरण के परिवर्तन को प्रभावी बनाता है। ध्वनियों और छोटे पदों का संतुलन पाठ में गेयता भी उत्पन्न करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में सहज, प्रवाहपूर्ण अवधी तथा भावानुकूल, लयात्मक और चित्रात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

त्वरित सुझाव: भाषिक विशेषता लिखते समय उसी पंक्ति से शब्दरूप का उदाहरण अवश्य दीजिए।

9(ख). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कथित घटना, पात्रों की मनःस्थिति और रसात्मक प्रभाव स्पष्ट किए जाते हैं।
- हनुमान का आगमन निराश वातावरण में उत्साह का संचार करता है।

चरण 1: वानर-समूह की व्याकुलता काव्यांश में वानर-समूह की विकलता के माध्यम से दुख और चिंता से भरे वातावरण का चित्र मिलता है। समूह की व्याकुलता केवल किसी एक व्यक्ति की पीड़ा नहीं रहती, वह सबकी सामूहिक संवेदना बन जाती है। इस प्रकार कवि करुण भाव को अत्यंत संक्षिप्त शब्दों में सजीव कर देता है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव ऐसे विषादपूर्ण वातावरण में हनुमान का आना नई आशा और शक्ति का प्रतीक है। उनकी वीरता और कार्यकुशलता का स्मरण निराशा को दूर करता है। कवि ने इसे ऐसे प्रस्तुत किया है मानो स्वयं करुण रस के बीच वीर रस आ गया हो। दुख और उत्साह का यह सुंदर मेल हनुमान के व्यक्तित्व की महत्ता को उभारता है तथा पाठक को राहत और विश्वास का अनुभव कराता है।

चरण 3: निष्कर्ष व्याकुल वानरों के बीच हनुमान का आगमन निराशा में आशा और करुणा में वीरता का संचार करता है; यही अंश का प्रमुख भाव-सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में पहले वातावरण और फिर हनुमान के आने से हुए परिवर्तन को जोड़िए।

9(ग). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु या स्थिति की समानता दूसरी वस्तु या स्थिति से दिखाई जाती है।
- अनुप्रास में वर्ण की आवृत्ति कथन को ध्वनि-सौंदर्य देती है।

चरण 1: उपमा का विवेचन 'जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा अलंकार है। 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। व्याकुल वानरों के बीच हनुमान का आगमन उपमेय और करुण रस के बीच वीर रस का प्रकट होना उपमान है। दोनों में दुखपूर्ण वातावरण में उत्साह और शक्ति उत्पन्न करने की समानता है। इस तुलना से हनुमान का आगमन केवल घटना न रहकर भावों का प्रभावशाली परिवर्तन बन जाता है।

चरण 2: अनुप्रास का विवेचन 'प्रभु प्रताप' में प वर्ण की और 'विकल भए वानर' में व वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास का सौंदर्य आता है। ये ध्वनि-साम्य पंक्तियों को मधुर और स्मरणीय बनाते हैं। अलंकार यहाँ केवल सजावट नहीं हैं; उपमा भाव-परिवर्तन को स्पष्ट करती है और अनुप्रास उस कथन की लय को पुष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा तथा 'प्रभु प्रताप' और 'विकल भए वानर' में अनुप्रास अलंकार है।

त्वरित सुझाव: उपमा बताते समय उपमेय, उपमान और 'जिमि' जैसे वाचक शब्द को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

9. अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन
सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से, सदा छलकता नीर
रोक शोक में भी हँसता है, शैशव का सुकुमार शरीर । [6 अंक]

9(क). काव्यांश की दो भाषिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक विशेषताओं के लिए शब्दावली, लय और अभिव्यक्ति के स्वरूप का परीक्षण आवश्यक है।
- प्रतीकात्मक कथन ठोस चित्रों के माध्यम से व्यापक सामाजिक अर्थ व्यक्त करता है।

चरण 1: संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली काव्यांश में साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग है। 'अट्टालिका', 'आतंक', 'विप्लव', 'प्लावन', 'प्रफुल्ल', 'जलज' और 'शैशव' जैसे तत्सम शब्द भाषा को गंभीरता और गरिमा देते हैं। साथ ही 'रे' जैसे संबोधन से कथन में सीधापन और आवेग आता है। इस प्रकार शब्दावली साहित्यिक होते हुए भी संबोधन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

चरण 2: चित्रात्मक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भाषा की दूसरी विशेषता उसकी चित्रात्मकता और प्रतीकात्मकता है। ऊँची अट्टालिका आतंक का, पंक और जलज साधारण जीवन के बीच प्रसन्नता का तथा शैशव का सुकुमार शरीर सहज जीवन-आनंद का बिंब बनता है। जल और कमल के दृश्य से सामाजिक भाव को समझने योग्य रूप मिलता है। पंक्तियों की ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति और प्रवाह उनकी संगीतमयता भी बढ़ाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक खड़ी बोली है और उसकी अभिव्यक्ति चित्रात्मक, प्रतीकात्मक तथा लययुक्त है।

त्वरित सुझाव: तत्सम शब्दों के उदाहरण और किसी एक बिंब का अर्थ साथ लिखने से उत्तर पुष्ट होता है।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्णों की पुनरावृत्ति अनुप्रास का तथा उपमेय में उपमान का अभेद आरोप रूपक का आधार है।
- अलंकार का उत्तर पंक्ति के प्रमाण और उसके सौंदर्य को जोड़कर लिखा जाता है।

चरण 1: अनुप्रास के उदाहरण 'पंक पर' और 'शैशव का सुकुमार शरीर' जैसे प्रयोगों में क्रमशः प तथा श वर्ण की पुनरावृत्ति ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न करती है। विशेष रूप से 'शैशव', 'सुकुमार' और 'शरीर' में निकटवर्ती स-श ध्वनियाँ कोमलता की अनुभूति को सुदृढ़ करती हैं। अधिक स्पष्ट उदाहरण 'पंक पर' और 'शैशव ... शरीर' हैं, जिनमें संबंधित वर्ण दोहराए गए हैं।

चरण 2: रूपक का प्रभाव 'अट्टालिका नहीं है रे, आतंक भवन' में अट्टालिका पर आतंक के भवन का अभेद आरोप किया गया है। वह केवल ऊँचा मकान न रहकर भय का मूर्त रूप बन जाती है; यहाँ रूपक का सौंदर्य है। इससे संपन्न वर्ग के सुरक्षित दिखाई देने वाले निवासों के भीतर छिपे भय का संकेत मिलता है। ध्वनि-सौंदर्य और यह अर्थ-योजना मिलकर काव्यांश की सामाजिक व्यंजना को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष 'पंक पर' तथा 'शैशव ... शरीर' में अनुप्रास और अट्टालिका को 'आतंक भवन' कहने में रूपक अलंकार का सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: अनुप्रास में दोहराया गया वर्ण बताइए और रूपक में अभेद आरोप को स्पष्ट कीजिए।

9(ग). काव्यांश का भाव सौन्दर्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में प्रकृति के बिंबों द्वारा समाज के दो वर्गों की भिन्न मनःस्थिति व्यक्त होती है।
- सहज जीवन-आनंद और भय का विरोध भाव-सौंदर्य को उभारता है।

चरण 1: संपन्न वर्ग का भय कवि अट्टालिकाओं को आतंक का भवन कहकर संपन्न वर्ग की भयग्रस्त मनोदशा दिखाता है। बाहरी वैभव के भीतर अपनी संपत्ति और प्रभुत्व के नष्ट होने की आशंका छिपी है। विप्लव का संकेत इस वर्ग को आतंकित करता है। इस चित्र से स्पष्ट होता है कि ऊँचे भवन और धन अपने आप निर्भयता तथा सच्ची प्रसन्नता प्रदान नहीं करते।

चरण 2: साधारण जीवन की प्रसन्नता इसके विपरीत पंक में खिलता छोटा कमल और बालक का सुकुमार शरीर सहज आनंद के प्रतीक हैं। कठिन परिस्थितियों में रहने वाला साधारण जीवन भी हँस सकता है और परिवर्तन से नई आशा पा सकता है। कमल की प्रफुल्लता तथा बालक की हँसी में जीवन की स्वाभाविक शक्ति प्रकट होती है। संपन्नता के भय और अभावों के बीच भी बनी प्रसन्नता का यह विरोध काव्यांश को मार्मिक सामाजिक अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने वैभवशाली वर्ग के भय के सामने साधारण जन की सहज प्रसन्नता, जीवन-शक्ति और परिवर्तन के प्रति आशा को प्रतिष्ठित किया है।

त्वरित सुझाव: अट्टालिका के भय और कमल-बालक की प्रसन्नता का विरोध दिखाकर भाव स्पष्ट कीजिए।

10(क). कुंभकर्ण के द्वारा पूछे जाने पर रावण ने अपनी व्याकुलता के बारे में क्या कहा और कुंभकर्ण से क्या सुनना पड़ा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप में रावण द्वारा कुंभकर्ण को जगाने के बाद की बातचीत से संबंधित है।
- उत्तर में रावण का संकट और कुंभकर्ण की स्पष्ट चेतावनी दोनों शामिल होने चाहिए।

चरण 1: रावण ने अपनी व्याकुलता का कारण बताया कुंभकर्ण के पूछने पर रावण ने सीता-हरण से आरंभ करके युद्ध की स्थिति तक का वृत्तांत सुनाया। उसने बताया कि वानरों ने उसके अनेक योद्धाओं का संहार कर दिया है। दुर्मुख, देवताओं के शत्रु कहलाने वाले वीर, मनुष्यों और असुरों का अंत करने वाले योद्धा, अतिकाय, अकंपन और महोदर जैसे पराक्रमी सैनिक रणभूमि में मारे गए हैं। सेना और प्रमुख वीरों के लगातार विनाश से वह अत्यंत चिंतित तथा व्याकुल था। इसीलिए उसने संकट की इस घड़ी में कुंभकर्ण को जगाया था।

चरण 2: कुंभकर्ण ने रावण को फटकारा रावण की बातें सुनकर कुंभकर्ण ने दुख प्रकट किया और उसे समझाया कि उसने जगज्जननी सीता का हरण करके कल्याण चाहने की व्यर्थ आशा की है। सीता साधारण नारी नहीं हैं; उनके हरण का परिणाम राक्षसकुल के लिए विनाशकारी होगा। उसने रावण के कृत्य को अनुचित बताकर स्पष्ट किया कि अब उसका कल्याण संभव नहीं दिखता। इस प्रकार सहायता की आशा में बुलाए गए भाई से रावण को अपने अपराध की कठोर निंदा और विनाश की चेतावनी सुननी पड़ी।

चरण 3: निष्कर्ष रावण अपने बड़े-बड़े योद्धाओं और सेना के विनाश से व्याकुल था। कुंभकर्ण ने सीता-हरण के लिए उसे फटकारते हुए कहा कि जगज्जननी का हरण करके कल्याण की आशा करना व्यर्थ है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो भागों में बाँटिए: पहले युद्ध में हुई हानि, फिर सीता-हरण पर कुंभकर्ण की फटकार।

10(ख). 'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के दृश्य को घरेलू जीवन की परिचित वस्तुओं से जोड़कर कवि रंग, नमी और ताजगी का अनुभव कराता है।
- उपमा में केवल रंग की समानता नहीं, वातावरण की अनुभूति भी महत्त्वपूर्ण होती है।

चरण 1: आरंभिक भोर की तुलना शमशेर बहादुर सिंह ने भोर के गहरे नीले आकाश की तुलना नीले शंख से की है। शंख की नीली आभा से अभी पूरी तरह उजाला न होने वाले नभ का रंग स्पष्ट होता है। यह बिंब प्रातःकाल के शांत और पवित्र वातावरण का भी अनुभव कराता है।

चरण 2: राख से लीपे चौके का बिंब इसके बाद कवि भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका कहता है, जो अभी गीला पड़ा है। सूर्योदय से पहले का धूसर, हलका उजाला राख के रंग जैसा है। आकाश में व्याप्त ओस और नमी का आभास गीले चौके से मिलता है। इस घरेलू उपमान से प्रकृति का सौंदर्य आत्मीय और सजीव बन जाता है।

चरण 3: लालिमा के बदलते रूप सूर्योदय की बढ़ती लालिमा को कवि बहुत काली सिल पर ज़रा-सा लाल केसर धुल जाने और स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल देने जैसे बिंबों से भी उभारता है। इस प्रकार अँधेरे की पृष्ठभूमि पर उभरता लाल रंग क्रमशः स्पष्ट होता है। सभी तुलनाएँ मिलकर भोर के बदलते रंगों का गतिशील चित्र बनाती हैं। इन उपमानों से पाठक रंगों को केवल देखता नहीं, सुबह की स्वच्छता और शीतलता को भी अनुभव करता है।

चरण 4: निष्कर्ष भोर का नभ नीले शंख और राख से लीपे गीले चौके जैसा है; आगे केसर और लाल खड़िया के बिंब उसके नीले, धूसर तथा लाल रंगों और ताजगी को मूर्त करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले नीले शंख और गीले चौके की तुलना लिखें, फिर प्रत्येक को नभ के रंग और नमी से जोड़ें।

10(ग). कवि ने कथ्य को महत्त्व दिया है अथवा भाषा को – 'बात सीधी थी पर' के आधार पर तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य वह भाव या विचार है जिसे कविता पाठक तक पहुँचाना चाहती है।
- भाषा कथ्य की अभिव्यक्ति का साधन है; सहज संप्रेषण उसकी सफलता की कसौटी है।

चरण 1: कवि की प्राथमिकता पहचानना कुँवर नारायण ने इस कविता में कथ्य को प्राथमिक महत्त्व दिया है। कहने वाली बात सीधी थी, किंतु कवि उसे भाषा के चक्कर में उलझा देता है। विचार को स्वाभाविक ढंग से कहने के बजाय शब्दों को अधिक प्रभावशाली बनाने की कोशिश में उसका सहज अर्थ बाधित होता है।

चरण 2: भाषा के अनावश्यक विस्तार का परिणाम कविता में पेंच और चूड़ी का बिंब इस स्थिति को स्पष्ट करता है। पेंच को अनावश्यक रूप से कसने पर उसकी चूड़ी बिगड़ जाती है और पकड़ ढीली हो जाती है। इसी प्रकार अभिव्यक्ति पर जरूरत से अधिक जोर देने और भाषा की कलाबाजी दिखाने से बात का असर घट जाता है। शब्दों की बाहरी चमक वास्तविक अर्थ का स्थान नहीं ले सकती।

चरण 3: तर्क का संतुलित निष्कर्ष कवि भाषा का महत्त्व अस्वीकार नहीं करता; वह ऐसी भाषा चाहता है जो कथ्य के अनुरूप हो। बातचीत की सहजता और उपयुक्त शब्दों से साधारण बात भी प्रभावपूर्ण बन सकती है। इसलिए कविता का आग्रह यह है कि भाषा को साध्य न बनाकर विचार की स्पष्ट, स्वाभाविक अभिव्यक्ति का साधन बनाया जाए। इसलिए उपयुक्त शब्द वही है जो भाव को बिना अनावश्यक उलझाव के पाठक तक पहुँचा दे।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने कथ्य को महत्त्व दिया है और ऐसी सहज भाषा का समर्थन किया है जो बात को स्पष्ट पहुँचाए; अनावश्यक भाषायी प्रदर्शन कथ्य को उलझा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कथ्य की प्राथमिकता के साथ पेंच और चूड़ी का उदाहरण दें; भाषा को पूरी तरह निरर्थक न बताएँ।

---

11. लोभ का यह जीतना नहीं कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार । आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बन्द हो जाएगा ? क्या आँख बन्द करके ही हम सपने नहीं लेते हैं ? और वे सपने क्या चैन-भंग नहीं करते हैं ? इससे मन को बन्द कर डालने की कोशिश तो अच्छी नहीं । वह अकारथ है यह तो हठवाला योग है । शायद हठ-ही-हठ है, योग नहीं है । इससे मन कृश भले ही हो जाए और पीला और अशक्त; जैसे विद्वान का ज्ञान । वह मुक्त ऐसे नहीं होता । इससे वह व्यापक की जगह संकीर्ण और विराट की जगह क्षुद्र होता है । इसलिए उसका रोम-रोम मूँदकर बन्द तो मन को करना नहीं चाहिए । [8 अंक]

11(क). 'लोभ को नकारना लोभ की ही जीत है' – कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोभ मन की प्रवृत्ति है; बाहर के आकर्षण से बचना उसके मिटने का प्रमाण नहीं है।
- मन का विवेकपूर्ण विकास और उसकी इच्छाओं का बलपूर्वक दमन अलग स्थितियाँ हैं।

चरण 1: नकार का आशय यहाँ लोभ को नकारने का अर्थ मन की इच्छा को हठपूर्वक दबाना और उसे बाहरी आकर्षणों से काट देना है। इससे इच्छा की जड़ समाप्त नहीं होती। व्यक्ति किसी वस्तु को देखने से बच सकता है, पर उसके प्रति आकर्षण उसके मन में बना रह सकता है।

चरण 2: लोभ की जीत कैसे होती है जब मनुष्य लोभ के भय से अपनी दृष्टि और मन के द्वार बंद कर देता है, तब उसका व्यवहार उसी लोभ से संचालित होता है। वह स्वतंत्र होने के बजाय अपने मन को संकीर्ण और अशक्त बनाता है। इसीलिए लेखक इसे मनुष्य की हार और लोभ की जीत कहता है; वास्तविक विजय मन को विवेकपूर्ण और व्यापक बनाने में है।

चरण 3: निष्कर्ष लोभ का दमन उसके मूल आकर्षण को नहीं मिटाता, बल्कि मनुष्य को भयभीत, संकीर्ण और अशक्त बनाता है; इसलिए यह लोभ की ही जीत है।

त्वरित सुझाव: नकार और वास्तविक मुक्ति का अंतर बताएँ तथा मन में इच्छा बची रहने को उत्तर का आधार बनाएँ।

11(ख). आँख फोड़ने का दृष्टांत क्यों दिया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृष्टांत किसी अमूर्त विचार को परिचित उदाहरण से स्पष्ट करता है।
- आकर्षण का मूल मन में है; इंद्रिय को निष्क्रिय करना मन की इच्छा समाप्त करना नहीं है।

चरण 1: दृष्टांत का प्रत्यक्ष अर्थ आँख फोड़ लेने पर व्यक्ति लोभ उत्पन्न करने वाली वस्तु को बाहर देख नहीं पाएगा। लेकिन केवल देखने की शक्ति नष्ट कर देने से उस वस्तु की कामना मन से समाप्त नहीं होती। इस उपाय में वस्तु से बचाव तो है, पर मन की इच्छा पर वास्तविक विजय नहीं है।

चरण 2: स्वप्न के उदाहरण से पुष्टि लेखक याद दिलाता है कि आँखें बंद करके भी हम सपने देखते हैं और वे हमारी शांति भंग कर सकते हैं। इसी तरह लोभनीय रूप मन की कल्पना में बना रह सकता है। आँख फोड़ने का दृष्टांत इसलिए दिया गया है कि बाहरी साधनों को नष्ट करना व्यर्थ हठ है; आवश्यक कार्य मन को समझना और उसे विवेकपूर्ण बनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष यह दृष्टांत बताता है कि दृष्टि नष्ट करने से मन का लोभ नहीं मिटता; बाहरी रोक के स्थान पर मन की प्रवृत्ति का परिवर्तन आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: आँख फोड़ने के उदाहरण को बंद आँखों में आने वाले सपनों से जोड़कर उसका उद्देश्य स्पष्ट करें।

11(ग). 'शायद हठ ही है, योग नहीं है' – आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- योग का उद्देश्य मन की मुक्ति और विकास है, केवल उसका दमन करना नहीं।
- किसी उपाय का मूल्य उसके परिणाम से तय होता है; संकीर्णता और अशक्ति मुक्ति नहीं हैं।

चरण 1: हठ का स्वरूप लेखक मन के सभी द्वार बंद कर देने की कोशिश को हठ कहता है। इसमें व्यक्ति इच्छाओं को समझकर उनसे मुक्त होने के बजाय उन्हें दबाने पर अड़ जाता है। आँख बंद करने पर भी स्वप्न आते हैं; इसी प्रकार बाहरी संपर्क रोक देने पर भी मन का आकर्षण बना रह सकता है।

चरण 2: योग से अंतर ऐसे दमन से मन व्यापक और विराट होने के बजाय संकीर्ण तथा क्षुद्र हो जाता है। वह कृश, पीला और अशक्त तो हो सकता है, पर स्वतंत्र नहीं होता। इसलिए यह वास्तविक योग नहीं है। योग का लक्ष्य पाने के लिए मन का स्वस्थ विकास चाहिए; केवल कठोर रोक और जिद से उस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष मन को बलपूर्वक बंद करना निष्फल जिद है, क्योंकि इससे मन दुर्बल होता है, मुक्त नहीं; इसी कारण लेखक उसे योग के बजाय हठ कहता है।

त्वरित सुझाव: हठ के परिणाम में मन की दुर्बलता और योग के लक्ष्य में मन की मुक्ति का अंतर अवश्य लिखें।

11(घ). मुक्त होने के लिए लेखक के अनुसार आवश्यक शर्त क्या है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुक्ति का अर्थ मन के द्वार बंद करना नहीं, उसे संकीर्णता से बाहर लाना है।
- मन का विस्तार और विवेक उसके स्वस्थ तथा स्वतंत्र होने के आधार हैं।

चरण 1: अनुचित उपाय का निषेध लेखक के अनुसार लोभ से मुक्ति के लिए मन का रोम-रोम मूँदकर उसे बंद करना उचित नहीं है। इंद्रियों को रोक देने या आकर्षक वस्तुओं से दूर भागने पर भी मन की इच्छा बनी रह सकती है। ऐसा दमन केवल मन को कमजोर करता है और मुक्ति का वास्तविक उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

चरण 2: आवश्यक शर्त स्पष्ट करना मुक्त होने के लिए मन को खुला, व्यापक और समर्थ रखना आवश्यक है। उसे संकीर्ण और क्षुद्र बनाने के बजाय विवेक के साथ विकसित करना चाहिए, जिससे वह आकर्षणों का सामना कर सके और उनका दास न बने। लेखक का आग्रह मन के स्वस्थ विस्तार पर है, उसकी संवेदनशीलता को हठपूर्वक कुचल देने पर नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष मुक्ति की आवश्यक शर्त मन को बंद करने के बजाय खुला, व्यापक और विवेकशील बनाना है, ताकि वह लोभ से स्वतंत्र हो सके।

त्वरित सुझाव: अंतिम पंक्ति को आधार बनाएँ: मन के द्वार बंद न करना और उसे व्यापक बनाना ही केंद्रीय उत्तर है।

अथवा

11. प्लेटफार्म पर उसके बहुत से दोस्त, भाई, रिश्तेदार थे, हसरत भरी नज़रों, बहते हुए आँसुओं, ठंडी साँसों और भिंचे हुए होठों को बीच में से काटती हुई रेल सरहद की तरफ बढ़ी । अटारी में पाकिस्तानी पुलिस उतरी, हिन्दुस्तानी पुलिस सवार हुई । कुछ समझ में नहीं आता था कि कहाँ से लाहौर खत्म हुआ और किस जगह से अमृतसर शुरू हो गया । एक ज़मीन थी, एक ज़बान थी, एक-सी सूरतें और लिबास, एक-सा लबो लहज़ा, और अंदाज थे, गालियाँ भी एक ही सी थीं जिनसे दोनों बड़े प्यार से एक दूसरे को नवाज़ रहे थे । बस मुश्किल सिर्फ़ इतनी थी कि भरी हुई बन्दूकें दोनों के हाथों में थीं । [8 अंक]

11(क). क्यों पता नहीं लगता कि कहाँ लाहौर खत्म हुआ और कहाँ अमृतसर शुरू हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में भौगोलिक सीमा और जनजीवन की समानता के अंतर को समझना आवश्यक है।
- पाठ में दिए गए भाषा, वेशभूषा और व्यवहार के संकेत उत्तर का आधार हैं।

चरण 1: पाठ में समानता के संकेत लाहौर और अमृतसर के बीच यात्रा करते समय धरती, लोगों की शक्ल-सूरत, पहनावा, भाषा, बोलने का लहजा और व्यवहार में कोई स्पष्ट बदलाव नहीं दिखाई देता। दोनों ओर के लोग एक ही सांस्कृतिक परिवेश के अंग लगते हैं। लेखक एक ज़मीन, एक ज़बान और एक-सी सूरतों का उल्लेख करके इस समानता को प्रत्यक्ष करता है।

चरण 2: सीमा का अर्थ समझना देशों के बँट जाने से लोगों की साझी संस्कृति और रोज़मर्रा के जीवन की समानता समाप्त नहीं हुई थी। इसलिए केवल लोगों को देखकर या उनकी बातचीत सुनकर यह पहचानना कठिन था कि लाहौर कहाँ समाप्त हुआ और अमृतसर कहाँ शुरू हुआ। राजनीतिक सीमा तो थी, लेकिन जनजीवन में वैसा अंतर नहीं था।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों स्थानों के लोगों की भाषा, वेशभूषा, सूरत और व्यवहार समान थे; इसलिए लाहौर और अमृतसर का अंतर सहज दिखाई नहीं देता था।

त्वरित सुझाव: समानता बताते समय गद्यांश से भाषा, पहनावा और लहजे के ठोस उदाहरण चुनिए।

11(ख). प्लेटफार्म पर खड़े लोगों की दशा कैसी थी, और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव संबंधी प्रश्न का उत्तर पात्रों के बाहरी हावभाव से स्पष्ट होता है।
- विदाई के प्रसंग में संबंधों की निकटता और अलगाव के दुःख को जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: लोगों की दशा बताना प्लेटफार्म पर खड़े दोस्त, भाई और रिश्तेदार अत्यंत दुःखी और भावुक थे। उनकी आँखों में आँसू थे, नज़रों में हसरत थी और वे ठंडी साँसें भर रहे थे। भिंचे हुए होंठ उनकी दबी हुई व्यथा और अपने मन की बात खुलकर न कह पाने की दशा को व्यक्त करते हैं। ये संकेत किसी सामान्य भीड़ के नहीं, आत्मीय लोगों की व्याकुल विदाई के हैं।

चरण 2: दुःख का कारण स्पष्ट करना रेल उनकी प्रिय आत्मीय को सरहद की ओर ले जा रही थी। साथ छूटने और उसके दूर चले जाने की पीड़ा से वे व्यथित थे। राजनीतिक सरहद इस बिछोह को और गहरा बना रही थी। वे उसे रोक नहीं सकते थे, इसलिए अपने दुःख को आँसुओं, साँसों और मौन के माध्यम से व्यक्त कर रहे थे।

चरण 3: निष्कर्ष वे आँसू बहाते, हसरत से देखते और ठंडी साँसें भरते खड़े थे, क्योंकि अपने प्रियजन से विदा लेने और सरहद के कारण दूर होने का दुःख उन्हें व्याकुल कर रहा था।

त्वरित सुझाव: भाव और उसके कारण को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए; हसरत भरी नज़रों और आँसुओं का प्रमाण दीजिए।

11(ग). पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की पुलिस कहाँ बदली और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में स्थान का उत्तर गद्यांश में उल्लिखित स्टेशन से लिया जाना चाहिए।
- दो देशों की सीमा पार करने पर सुरक्षा का दायित्व संबंधित देश की पुलिस सँभालती है।

चरण 1: बदलाव का स्थान पहचानना पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की पुलिस अटारी में बदली। गद्यांश में साफ बताया गया है कि वहाँ पाकिस्तानी पुलिस रेल से उतर गई और हिन्दुस्तानी पुलिस उसमें सवार हो गई। इसलिए इस प्रश्न में लाहौर या अमृतसर शहर का सामान्य उल्लेख करने के स्थान पर अटारी का नाम देना आवश्यक है।

चरण 2: परिवर्तन का कारण समझना रेल पाकिस्तान की ओर से आकर हिन्दुस्तान के क्षेत्र में प्रवेश कर रही थी। दोनों देश अलग राजनीतिक और प्रशासनिक इकाइयाँ थे; इसलिए अपने क्षेत्र में रेल की सुरक्षा और निगरानी का दायित्व अपने देश की पुलिस को लेना था। इसी सीमा संबंधी व्यवस्था के कारण पाकिस्तानी पुलिस की जगह हिन्दुस्तानी पुलिस ने ली।

चरण 3: निष्कर्ष पुलिस अटारी में बदली, क्योंकि रेल हिन्दुस्तान के क्षेत्र में आ रही थी और यहाँ सुरक्षा तथा निगरानी का दायित्व हिन्दुस्तानी पुलिस का था।

त्वरित सुझाव: कहाँ और क्यों वाले प्रश्न में पहले निश्चित स्थान लिखिए, फिर प्रशासनिक कारण समझाइए।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – 'मुश्किल सिर्फ़ इतनी थी कि भरी हुई बंदूकें दोनों के हाथों में थीं ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय वाक्य का संदर्भ और उसका निहितार्थ दोनों बताने चाहिए।
- साझी संस्कृति के बावजूद राजनीतिक विभाजन से उपजा अविश्वास इस कथन का केंद्र है।

चरण 1: कथन का संदर्भ समझना दोनों देशों के लोगों की भाषा, वेशभूषा, शक्ल-सूरत और बोलचाल में गहरी समानता थी। वे एक-दूसरे से परिचित आत्मीय ढंग से व्यवहार कर रहे थे। सामान्य जनजीवन में ऐसा कोई अंतर नहीं दिखाई देता था जो उन्हें मूलतः अलग सिद्ध करे। इसी समानता के बीच दोनों ओर की पुलिस के हाथों में भरी बंदूकों का उल्लेख किया गया है।

चरण 2: निहित विरोधाभास स्पष्ट करना भरी हुई बंदूकें राजनीतिक बँटवारे से पैदा हुई शत्रुता, आशंका और अविश्वास का संकेत हैं। जो लोग संस्कृति और व्यवहार में अपने लगते थे, वे सरकारी सीमा की रक्षा करते हुए हथियार लेकर आमने-सामने खड़े थे। इस प्रकार मनुष्यों की स्वाभाविक निकटता पर देशों के बीच का तनाव भारी पड़ रहा था। लेखिका इसी दुखद विरोधाभास की ओर ध्यान खींचती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि दोनों ओर के लोगों में गहरी सांस्कृतिक आत्मीयता थी, फिर भी राजनीतिक विभाजन और पारस्परिक अविश्वास ने उनके हाथों में हथियार थमा दिए थे।

त्वरित सुझाव: बंदूकों का केवल शाब्दिक अर्थ न लिखिए; उन्हें विभाजन और अविश्वास के प्रतीक से जोड़िए।

12(क). पहलवान की ढोलक का गाँव वालों पर क्या प्रभाव होता था ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन पहलवान की ढोलक ग्रामीण जीवन में उत्साह, भरोसे और संघर्ष की शक्ति का प्रतीक है।
- कथा में उसके प्रभाव को महामारी, भय और निराशा की पृष्ठभूमि में समझना चाहिए।

चरण 1: गाँव की भयावह स्थिति गाँव में महामारी और अभाव के कारण मृत्यु का आतंक छाया हुआ था। रात के सन्नाटे में कराहने, रोने और असहाय लोगों की पीड़ा की आवाज़ें वातावरण को और भयावह बना देती थीं। रोग और मृत्यु से जूझते ग्रामीणों का मन टूट रहा था। ऐसी परिस्थिति में पहलवान की ढोलक की आवाज़ उनके लिए किसी परिचित जीवंत सहारे की तरह थी।

चरण 2: ढोलक से मिलने वाला मानसिक बल रात में सुनाई पड़ती ढोलक की ताल लोगों के मन में साहस और उत्साह का संचार करती थी। उसका स्वर जैसे उन्हें हार न मानने और विपत्ति का सामना करने की प्रेरणा देता था। भय से भरे वातावरण में यह आवाज़ बताती थी कि जीवन की शक्ति अभी समाप्त नहीं हुई है। इससे निराश लोगों को थोड़ी देर के लिए अपने कष्ट भूलने और जीने का भरोसा बनाए रखने में सहायता मिलती थी।

चरण 3: प्रभाव की सीमा और महत्त्व ढोलक रोग या भूख को दूर नहीं कर सकती थी, पर उनका सामना करने की मानसिक शक्ति देती थी। उसका प्रभाव मनोरंजन से अधिक गहरा था: वह लोगों की जिजीविषा को जगाती और मृत्यु के सन्नाटे के बीच जीवन का स्वर बनाए रखती थी। इसलिए गाँव वालों के लिए उसकी ताल आशा और संघर्ष की प्रेरणा का माध्यम बन गई थी।

चरण 4: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक की आवाज़ गाँव वालों का भय और निराशा घटाती थी तथा उनमें उत्साह, साहस और जीने की इच्छा जगाती थी। महामारी के बीच वह जीवन से संघर्ष करते रहने का संबल थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में महामारी की परिस्थिति, ढोलक का मानसिक प्रभाव और जिजीविषा का संबंध स्पष्ट कीजिए।

12(ख). धर्मवीर भारती मेंढक मण्डली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बालक धर्मवीर की दृष्टि में पानी डालने की प्रथा का मूल्यांकन तर्क और पानी की कमी के आधार पर होता है।
- उत्तर में लेखक के तत्कालीन विचार बताने हैं; जीजी के विश्वास को लेखक की आपत्ति के स्थान पर न रखें।

चरण 1: सूखे में पानी की आवश्यकता भीषण गर्मी और अनावृष्टि के कारण पानी की कमी थी। लोग पानी के लिए परेशान थे और जीवन की आवश्यकताओं के लिए एक-एक मात्रा का महत्त्व था। ऐसी स्थिति में मेंढक मंडली पर बाल्टियों से पानी डालना बालक धर्मवीर

को उपयोगी काम नहीं लगता था। उनके लिए पीने और अन्य जरूरी कामों के पानी को इस प्रकार बहाना संकट को और बढ़ाने जैसा था।

चरण 2: प्रथा पर लेखक की तार्किक आपत्ति वे इस धारणा को स्वीकार नहीं करते थे कि इंदर सेना अथवा मेंढक मंडली पर पानी डाल देने से वर्षा हो जाएगी। उन्हें इस क्रिया और बादलों से बारिश होने के बीच कोई तर्कसंगत संबंध नहीं दिखाई देता था। इसलिए वे इसे अंधविश्वास पर आधारित ऐसा व्यवहार मानते थे जिसमें वास्तविक लाभ के बिना बहुमूल्य पानी नष्ट हो जाता है।

चरण 3: विरोध का आधार जोड़ना लेखक की आपत्ति का आधार केवल बच्चों की टोली से चिढ़ना नहीं था, बल्कि पानी की बर्बादी और वर्षा के बारे में प्रचलित विश्वास पर संदेह था। अकाल जैसी परिस्थिति में पानी बचाना उन्हें अधिक उचित लगता था। इसलिए वे मेंढक मंडली पर पानी डालने की जगह उस पानी को लोगों की जरूरी आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित रखने के पक्ष में थे।

चरण 4: निष्कर्ष धर्मवीर भारती इसे व्यर्थ मानते थे क्योंकि सूखे में पानी अत्यंत दुर्लभ था और मेंढक मंडली पर पानी डालने से वर्षा होने का कोई तर्कसंगत आधार उन्हें नहीं दिखता था। उन्हें यह पानी की बर्बादी लगती थी।

त्वरित सुझाव: दो मुख्य कारण अवश्य लिखिए: सूखे में पानी की कमी और पानी डालने से वर्षा होने पर अविश्वास।

12(ग). जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अन्तर क्या है ? 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन कामों का व्यवस्थित बँटवारा है; जाति-प्रथा मनुष्यों को जन्म के आधार पर स्थायी वर्गों में बाँटती है।
- डॉ. आंबेडकर के अनुसार स्वस्थ समाज में व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता तथा व्यक्ति की योग्यता का सम्मान आवश्यक है।

चरण 1: काम और काम करने वालों का भेद श्रम-विभाजन में समाज की आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग काम बाँटे जाते हैं। इसका उद्देश्य कार्यकुशलता और सहयोग बढ़ाना होता है। इसके विपरीत जाति-प्रथा केवल काम नहीं बाँटती, बल्कि श्रमिकों को भी अलग-अलग श्रेणियों में बाँट देती है। ये श्रेणियाँ ऊँच-नीच के क्रम में रखी जाती हैं, इसलिए उनमें समानता और सहज सहयोग नहीं रह जाता।

चरण 2: योग्यता और स्वतंत्रता का भेद उपयोगी श्रम-विभाजन में व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण के अनुसार काम चुना जा सकता है। परिस्थितियाँ बदलने पर वह व्यवसाय बदल भी सकता है। जाति-प्रथा में जन्म ही व्यवसाय तय करता है; व्यक्ति को अपनी योग्यता विकसित करने और मनपसंद काम करने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। आर्थिक परिवर्तन के समय भी पुराने पेशे से बँधे रहने पर बेरोजगारी तथा काम के प्रति अरुचि पैदा हो सकती है। इसीलिए जाति को स्वाभाविक श्रम-विभाजन कहना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बुनियादी अंतर यह है कि श्रम-विभाजन कार्यों का लचीला और उपयोगी बँटवारा है, जबकि जाति-प्रथा जन्म पर आधारित, ऊँच-नीच से युक्त श्रमिक-विभाजन है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में काम और श्रमिक, योग्यता और जन्म, तथा व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता का अंतर स्पष्ट कीजिए।

12(घ). चार्ली चैप्लिन के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का कला-संसार उनके अभावग्रस्त बचपन और साधारण मनुष्य के दुख के अनुभव से जुड़ा है।
- पाठ उनकी हास्य-कला में करुणा, आत्मसंघर्ष और मानवीय गरिमा के मेल को सामने लाता है।

चरण 1: अभाव और असुरक्षा से भरा बचपन चार्ली का बचपन गरीबी, भूख और पारिवारिक असुरक्षा के बीच बीता। उनकी माँ को गंभीर मानसिक बीमारी थी। इसलिए बचपन में उन्हें जिस स्नेह और स्थिरता की आवश्यकता थी, वह लगातार नहीं मिल सकी। बहुत छोटी

आयु से ही जीवन-निर्वाह और अपनी जगह बनाने का संघर्ष उनके सामने था। इन अनुभवों ने उन्हें वंचित और साधारण लोगों की पीड़ा से गहराई से जोड़ा।

चरण 2: पीड़ा को मानवीय हास्य में बदलना उन्होंने अपने दुखों को केवल निजी शिकायत बनाकर नहीं रखा, बल्कि अभिनय और मूक सिनेमा की कला में रूपांतरित किया। उनके प्रसिद्ध साधारण, बदहाल पात्र में अपमान, भूख और कठिनाइयों से जूझता मनुष्य दिखाई देता है। वह बार-बार गिरता है, फिर भी उठकर जीवन का सामना करता है। चार्ली की विशेषता यह है कि दर्शक उसके व्यवहार पर हँसते हुए उसके दुख को भी पहचानते हैं। उनका हास्य किसी कमजोर व्यक्ति को तुच्छ नहीं बनाता, बल्कि उसकी जीवटता को उभारता है। इस प्रकार उनका संघर्ष विश्वभर के साधारण मनुष्यों के संघर्ष की अभिव्यक्ति बन गया।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली ने गरीबी और पारिवारिक संकटों के बीच अपनी कला विकसित की तथा व्यक्तिगत वेदना को ऐसी करुणापूर्ण हँसी में बदला, जिससे हर साधारण मनुष्य अपना संबंध महसूस करता है।

त्वरित सुझाव: जीवन-संघर्ष लिखते समय बचपन के अभावों को उनकी करुणा और हास्य-कला के विकास से अवश्य जोड़िए।

12(ङ). भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा पति क्यों थोपा गया ? इस घटना के विरोध में दो तर्क दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन की बेटी की घटना ग्रामीण पंचायत की पितृसत्तात्मक मानसिकता और स्त्री की असहमति की उपेक्षा दिखाती है।
- विवाह में स्त्री की स्वतंत्र इच्छा तथा आरोपों की निष्पक्ष जाँच का सम्मान होना चाहिए।

चरण 1: पंचायत के फैसले की पृष्ठभूमि भक्तिन की विधवा बेटी की संपत्ति पर लालची रिश्तेदारों की दृष्टि थी। उसके जेठ के तीतरबाज साले ने उससे विवाह करने की योजना बनाई। लड़की ने उसे अस्वीकार किया, फिर भी वह उसके कमरे में घुस गया। दूसरे लोगों ने बाहर से दरवाजा बंद करके पंचायत बुला ली। लड़की ने उस व्यक्ति की पिटाई की थी, किंतु पंचायत ने उसके विरोध को महत्व नहीं दिया। एक कमरे में साथ मिलने को ही संबंध का प्रमाण मानकर कलियुग और बदनामी की दुहाई दी गई और उसी व्यक्ति को उसका पति बना दिया गया।

चरण 2: फैसले के विरोध में दो तर्क पहला तर्क: विवाह स्त्री की स्वतंत्र सहमति से होना चाहिए। लड़की की अस्वीकृति और उसका प्रतिरोध स्पष्ट थे; उनकी उपेक्षा करके विवाह थोपना उसकी स्वतंत्रता तथा आत्मसम्मान का हनन था। दूसरा तर्क: कमरे में किसी पुरुष का जबरन घुसना और बाहर से दरवाजा बंद कर दिया जाना स्त्री की सहमति या अपराध का प्रमाण नहीं है। पंचायत को षड्यंत्र और संपत्ति के स्वार्थ की निष्पक्ष जाँच करनी चाहिए थी। उसने दोषी को दंड देने के स्थान पर पीड़ित स्त्री को ही जीवनभर के बंधन में डाल दिया।

चरण 3: निष्कर्ष पंचायत ने बदनामी और कथित सामाजिक मर्यादा के नाम पर पति थोपा। यह निर्णय स्त्री की सहमति और निष्पक्ष न्याय, दोनों के विरुद्ध था।

त्वरित सुझाव: घटना का कारण बताने के बाद दोनों तर्क अलग रखिए: पहला स्वतंत्र सहमति पर और दूसरा प्रमाण तथा न्याय पर।

13. 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर उन जीवन मूल्यों पर विचार कीजिए, जो यशोधर बाबू को किशनदा से उत्तराधिकार में मिले थे । आप उनमें से किन्हें अपनाना चाहेंगे ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किशनदा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक थे; उनसे मिले संस्कार उनके सादे, सामुदायिक और अनुशासित जीवन की आधारभूमि हैं।
- जीवन-मूल्यों का मूल्यांकन करते समय मानवीय आदर्शों को अपनाना और बदलती परिस्थितियों के प्रति विवेकशील रहना आवश्यक

है।

चरण 1: किशनदा से प्राप्त संस्कार यशोधर बाबू को किशनदा से सादगी, आत्मानुशासन, परिश्रम और ईमानदारी के संस्कार मिले। किशनदा की जीवन-पद्धति में दिखावे तथा अनावश्यक खर्च का आकर्षण नहीं था। उनसे प्रभावित यशोधर बाबू भी सीमित साधनों में मर्यादित जीवन बिताने को उचित मानते हैं। वे केवल धन और आधुनिक सुविधाओं से किसी व्यक्ति की सफलता नहीं आँकते। उनके लिए आचरण और जिम्मेदारी का महत्व अधिक है।

चरण 2: सामुदायिक आत्मीयता और जिम्मेदारी किशनदा पहाड़ से आने वाले युवकों को सहारा देते थे और उनके रहने तथा रोजगार पाने में सहायता करते थे। इस व्यवहार से यशोधर बाबू ने अपनापन, परोपकार और दूसरों के सुख-दुख में सहभागी होने का मूल्य सीखा। रिश्तेदारी और सामाजिक संबंध निभाना उनके लिए औपचारिकता नहीं, जिम्मेदारी है। यही कारण है कि वे ऐसे जीवन को अधूरा समझते हैं जिसमें व्यक्ति केवल अपने परिवार की सुविधा और प्रतिष्ठा तक सीमित हो जाए।

चरण 3: मैं किन मूल्यों को अपनाना चाहूँगा मैं ईमानदारी, सादा जीवन, आत्मानुशासन और जरूरतमंद की सहायता करने की भावना अपनाना चाहूँगा। ये मूल्य व्यक्ति को विश्वसनीय बनाते हैं और समाज में सहयोग बढ़ाते हैं। विशेष रूप से नए शहर में संघर्ष कर रहे युवक को आश्रय या मार्गदर्शन देना किशनदा का अनुकरणीय गुण है। बड़ों के अनुभव का सम्मान तथा संबंधों में आत्मीयता बनाए रखना भी उपयोगी है।

चरण 4: मूल्यों को समय के अनुकूल जीना इन आदर्शों को अपनाते हुए मैं नई पीढ़ी से संवाद और समयानुकूल परिवर्तन को भी आवश्यक मानूँगा। किशनदा की स्मृति यशोधर बाबू को नैतिक आधार देती है, पर वर्तमान को केवल अतीत की कसौटी पर परखने से परिवार में दूरी बढ़ती है। इसलिए सादगी का अर्थ हर नई सुविधा का विरोध और आत्मसम्मान का अर्थ आत्मीय सहायता ठुकराना नहीं होना चाहिए। मूल मानवीय संवेदना को बनाए रखकर विचारों में लचीलापन रखना इन संस्कारों का अधिक सार्थक पालन होगा।

चरण 5: निष्कर्ष किशनदा की विरासत का सार सादगी, ईमानदारी, परोपकार और सामाजिक आत्मीयता है। मैं इन मूल्यों को अपनाकर उन्हें संवादशील और समयानुकूल व्यवहार के साथ जोड़ना चाहूँगा।

त्वरित सुझाव: पहले किशनदा से मिले मूल्य समझाइए, फिर अपने चुने हुए मूल्यों और उन्हें अपनाने के कारण स्पष्ट कीजिए।

14(क). मुअनजो दड़ो की सभ्यता पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी, कैसे ? पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्ट कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूर्ण विकसित सभ्यता का मूल्यांकन नगर-योजना, सार्वजनिक सुविधाओं, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक परिष्कार से किया जाता है।
- ओम थानवी के पाठ में मुअनजो दड़ो के अवशेष व्यवस्थित, सुसंस्कृत और सामुदायिक जीवन के प्रमाण हैं।

चरण 1: नियोजित नगर और उन्नत निर्माण-कौशल मुअनजो दड़ो की चौड़ी सड़कों, व्यवस्थित गलियों और योजनापूर्वक बने मकानों से स्पष्ट होता है कि वहाँ बस्ती का विकास संयोग से नहीं हुआ था। पकी ईंटों का उपयोग, घरों में आँगन तथा स्नान की व्यवस्था और निर्माण में दिखाई देने वाली सुव्यवस्था विकसित स्थापत्य-बोध के प्रमाण हैं। नगर के ऊँचे और निचले हिस्सों की संरचना भी नागरिक जीवन के संगठन को दिखाती है।

चरण 2: जल-प्रबंधन और सार्वजनिक जीवन घरों और नगर में कुओं की व्यवस्था, स्नानघर तथा ढकी हुई नालियाँ स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति सजगता दर्शाती हैं। विशाल सार्वजनिक स्नानागार केवल निर्माण-कौशल का नहीं, सामुदायिक जीवन की विकसित व्यवस्था का भी उदाहरण है। पानी की निकासी की सोची-समझी प्रणाली बताती है कि नागरिक सुविधाओं को नगर-निर्माण का आवश्यक अंग माना गया था।

चरण 3: अर्थव्यवस्था, कला और संस्कृति के प्रमाण खेती, अनाज के भंडारण, व्यापार तथा शिल्पकर्म के प्रमाण एक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था की ओर संकेत करते हैं। मानकीकृत बाटों से लेन-देन की विकसित पद्धति का पता चलता है। मुहरें, मृद्भांड, आभूषण और

नर्तकी की कांस्य मूर्ति जैसे अवशेष कलात्मक रुचि तथा कुशल कारीगरी को सामने लाते हैं। रोजमर्रा की उपयोगी वस्तुओं में भी सौंदर्य-बोध दिखाई देता है। पाठ में भव्य राजमहलों और शासकीय शक्ति के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक सुविधाओं और जीवन की सुव्यवस्था अधिक उभरती है। इससे उस सभ्यता की समृद्धि के साथ उसके सांस्कृतिक परिष्कार का भी परिचय मिलता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार मुअनजो दड़ो का नियोजित नगर, उन्नत जल-निकास, सार्वजनिक स्नानागार, विकसित व्यापार और परिष्कृत कलाएँ सिद्ध करती हैं कि वह पूर्ण विकसित मानव सभ्यता थी। उसकी विशेषता नागरिक जीवन की सुव्यवस्था और संस्कृति का व्यापक विस्तार था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल अवशेषों की सूची न दें; हर उदाहरण के साथ बताएँ कि उससे नगर-योजना, स्वच्छता, अर्थव्यवस्था या कला का कौन-सा विकास सिद्ध होता है।

14(ख). ऐन फ्रैंक की डायरी में ऐसी क्या विशेषताएँ हैं कि वह पिछले 50 वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में एक है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी नाजी उत्पीड़न के बीच छिपकर रहने वाली एक किशोरी के निजी अनुभवों और मनोभावों का प्रामाणिक दस्तावेज है।
- इसकी लोकप्रियता का आधार ऐतिहासिक साक्ष्य के साथ सहज अभिव्यक्ति, आत्मविश्लेषण और सार्वभौम मानवीय संवेदना का मेल है।

चरण 1: इतिहास का सजीव और निजी साक्ष्य डायरी में दूसरे विश्वयुद्ध के समय यहूदियों पर हुए अत्याचारों और भय के वातावरण का अनुभव किसी दूर खड़े इतिहासकार के विवरण की तरह नहीं मिलता। ऐन स्वयं उस संकट को जी रही थी। छिपकर रहना, पकड़े जाने का डर, सीमित स्थान में अनेक लोगों के साथ रहना और साधारण सुविधाओं का अभाव पाठक को युद्ध की मानवीय कीमत समझाते हैं। इस प्रत्यक्ष अनुभव से डायरी में असाधारण प्रामाणिकता और मार्मिकता आती है।

चरण 2: किशोर मन का ईमानदार आत्मप्रकाश ऐन अपने सुख-दुख, अकेलेपन, इच्छाओं, पारिवारिक संबंधों और भीतर उठने वाले द्वंद्वों को बिना बनावट के लिखती है। वह अपने व्यवहार तथा बड़ों के व्यवहार पर भी विचार करती है। डायरी को आत्मीय सहेली मानकर की गई यह बातचीत भाषा में सहजता और विश्वास पैदा करती है। पाठक को केवल एक पीड़ित लड़की की कहानी नहीं, एक विचारशील और संवेदनशील किशोरी के विकसित होते व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। उसकी भावनाओं से अलग-अलग देशों और पीढ़ियों के पाठक अपना संबंध बना पाते हैं।

चरण 3: विपत्ति में आशा और सार्वभौम मानवीय मूल्य भीषण परिस्थितियों के बावजूद ऐन में जीवन के प्रति जिज्ञासा, प्रेम की आकांक्षा और भविष्य के सपने बने रहते हैं। उसकी रचना मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और जीने की इच्छा का महत्त्व उजागर करती है। निजी पीड़ा के माध्यम से युद्ध, नस्ली घृणा और अन्याय का अमानवीय रूप सामने आता है। रोचक और आत्मीय शैली इस गंभीर अनुभव को सीधे हृदय तक पहुँचाती है। इसलिए डायरी अपने समय का दस्तावेज होने के साथ हर समय के पाठक को संवेदनशील बनाने वाली साहित्यिक कृति भी बन जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐतिहासिक प्रामाणिकता, किशोर मन की निष्कपट अभिव्यक्ति, सहज भाषा, मार्मिक अनुभव और विपत्ति के बीच जीवित आशा ने ऐन फ्रैंक की डायरी को विश्वभर में लोकप्रिय बनाया। निजी जीवन का यह वृत्तांत व्यापक मानवता की पीड़ा और आकांक्षा की आवाज बन गया है।

त्वरित सुझाव: लोकप्रियता के कारण बताते समय युद्ध का संदर्भ, किशोरी का आत्मविश्लेषण, आत्मीय शैली और मानवीय आशा को उदाहरणों सहित जोड़ें।